Postal Registration No. CHD/0107/2024-2026 Posted at MBU Chandigarh RNI No. CHABIL/2000/3469

हिन्दी/अंग्रेजी मासिक पत्रिका

दीन बन्धु सर छोटूराम

जाट लहर

सत्यमेव जयते

जाट सभा, चण्डीगढ़ के सौजन्य से प्रकाशित

वर्ष 24 अंक 01 30 जनवरी, 2024 मूल्य 5 रुपये

प्रधान की कलम से

'दीन' के बंधु चौधरी छोटूराम

बसंत पंचमी पर विशेष

डा. महेन्द्र सिंह मलिक

जिसके पांव ना फटी बिवाई–वो क्या जाने पीर–पराई लेकिन सर छोटूराम एक मात्र नेता जो 'दीन' थे। बालमन साहूकार के दुर्व्यवहार से आहत हुये कर्मठ योद्धा ने तभी से संकल्प लिया और दीन से दीन बंधु बना। किसान मानवता का पुजारी और कीट–पक्षी तक का रक्षक है। लेकिन सरकारों की लगातार बेरूखी से किसान और किसानी दोनों आहत है खेती दिन बे दिन घाटे का सौदा बनती गई। दीनबंधु ने अपने जीवनकाल में विपरित वातावरण, परिस्थितियों और उस समय के अखंड और धुर्त अधिकारियों के बावजूद 32 बिल किसान भलाई हेतू पारित करवा दिए। आए दिन पड़ते अकालों की विपक्षता तक को सदा के लिए हल निकाला और भाखड़ा डैम की रूप रेखा तैयार करवा दी और जिसे देखने हेतू वे संसार में नहीं रहे।

किसानों, मजदूरों एवं विशेषतौर से संयुक्त पंजाब के ग्रामीण समाज के मसीहा दीन बन्धु चौ० छोटू राम का जन्म वैसे तो 24 नवम्बर 1881 को रोहतक (हरियाणा) के छोटे से गांव गढ़ी सांपला में एक गरीब किसान सुखीराम के घर में हुआ लेकिन बसन्त पंचमी के त्योहार के अवसर पर एक दिन लाहौर में एक किसान सम्मेलन के दौरान उन्होंने अपनी प्रबल इच्छा जाहिर की कि किसानों की खुशहाली एवं फसलों की खुशबू से परिपूर्ण बसंत पंचमी का पर्व ही मेरे जन्म दिवस के रूप में माना जाये। अतः इस महा शख्शीयत की यह प्रबल इच्छा ही उनके किसान–मजदूर वर्ग के प्रति गहरे लगाव को जाहिर करती है।

दीनबंधु किसी जाति वर्ग के ना थे वे मानवता के पुजारी और स्वयं एक पूर्ण संस्था थे, जो एक वकील शिक्षाविद–राजनेता–किसान और दीनबंधु थे। मजहब नहीं सिखाता अपनो से बैर रखना उन्होंने चरितार्थ कर दिखाया, इसीलिए उन्हें मुस्लिम वर्ग "छोटूखान" के नाम से भी संबोधित करता था।दीन बंधु कहते थे "गरीब को न सताना वो रो देगा और अनसुनी करने वालों को जड़ मूल से खो देगा।" चंपारन सत्याग्रह एक उत्कृष्ट उदाहरण है। चौधरी छोटु राम सदैव किसान व किसानों के बेरोजगार पुत्रों की बेरोजगारी दूर करने की बात करते थे व कहते थे **"म्यसर ना हो जिस खेत से दो जून की रोटी उस खेत के गोछाए गन्दम को जला दो"** तथा दूसरे ही पल **"भर्ती होजा रै रंगरूट, आड़ै मिलै तनै–टूटे जूते उड़े मिलैंगे बूट।"** किसान की दशा दिशा बदलने हेतू वे विरोध भी सहते रहे ताकि किसान का बेटा फौज में जाएगा तो अपने बच्चों को शिक्षा भी दे सकेगा, और धर की आर्थिक दशा–दिशा भी सुधार सकेगा।

शेष पेज–2 पर

बंसत पंचमी एवं दीनबन्धु सर छोटूराम जयंती समारोह 15.02.2024 को मनाया जायेगा।

इस अवसर पर श्री मनोहर लाल, माननीय मुख्यमंत्री "Chronicles and Memoirs" पुस्तक का विमोचन करेंगे।

आप सबको जानकर अति प्रसन्नता होगी कि जाट सभा चण्डीगढ़/पंचकूला द्वारा 15 फरवरी, 2024 को प्रातः 11:00 बजे से शाम 4:00 बजे तक जाट भवन, 2–बी, 27–ए, मध्य मार्ग, चण्डीगढ़ में बंसत पंचमी एवं दीनबंधु चौधरी छोटू जी के 143वीं जयंती के अवसर पर एक भव्य समारोह का आयोजन किया जायेगा।

इस अवसर पर समारोह के मुख्य अतिथि श्री मनोहर लाल माननीय मुख्य मंत्री हरियाणा समारोह की अध्यक्षता करेंगे व जाट सभा द्वारा प्रकाशित पुस्तक "Chronicles and Memoirs" का विमोचन करेंगे। चौधरी रणजीत सिंह, बिजली एवं जेल मंत्री, हरियाणा समरोह की अध्यक्षता करेंगे। चौ. बीरेन्द्र सिंह, पूर्व केन्द्रीय मंत्री एवं श्रीमती किरण खेर, माननीय सांसद, यू.टी., चण्डीगढ़ कार्यक्रम में बतौर सम्माननीय अतिथि भाग लेंगे। इसके अतिरिक्त देश–विदेश से गणमान्य व्यक्ति, बुद्धिजीवी, राष्ट्र की विभिन्न जाट संस्थाओं के पदाधिकारियों तथा अन्य समाज सेवियों को भी कार्यक्रम में शामिल होने के लिए आमंत्रित किया गया है।

इस अवसर पर समाज के मेधावी छात्रों, उत्कृष्ट खिलाड़ियों, जाट सभा के 80 वर्ष की आयु पूर्ण कर चुके आजीवन सदस्यों, गत वर्ष के दौरान सरकारी व निजी सेवाओं से सेवा निवृत्त होने वाले जाट सभा के आजीवन सदस्यों व सभा द्वारा प्रकाशित उक्त पुस्तक के प्रकाशन में सहयोग प्रदान करने वाले सज्जनों को सम्मानित किया जायेगा। हरियाणवी रागनी व सांस्कृतिक कार्यक्रम समारोह के विशेष आकर्षण होंगे। अतः आप से सविनय निवेदन है कि आप सपरिवार सहित 15 फरवरी 2024 को जाट भवन, 2–बी, 27–ए, मध्य मार्ग, चण्डीगढ़ में पधार कर समारोह की शोभा बढ़ायें।

निवेदक, जाट सभा चण्डीगढ़/पंचकूला

शेष पेज–1

देश को साम्प्रदायिकता, भ्रष्टाचार एवं भाई–भतीजावाद जैसी कुरीतियों से बचाने तथा करोड़ों किसानों व मजदूरों को आर्थिक शोषण से मुक्ति दिलाने हेतू उन्होंने अपने वकालत के पेशे को ठुकरा कर सक्रिय राजनीति में प्रवेश किया और वर्ष 1916 में रोहतक जिले के कांग्रेस अध्यक्ष चुने गये, लेकिन मात्र चार वर्ष बाद कलकत्ता अधिवेशन के अन्दर वर्ष 1920 में ही कांग्रेस द्वारा चलाये गये असहयोग आंदोलन से अपनी असहमति जताते हुए कांग्रेस से त्याग पत्र दे दिया। अतः वर्ष 1923 में सर फजले हुसैन के साथ मिलकर किसान,मजदूर व छोटे काश्तकारों के कल्याण को सर्वोपरि रखते हुए नैशनल यूनियननिष्ट पार्टी का गठन किया। यह पार्टी धर्म निरपेक्षता के आधार पर गठित की गई। वर्ष 1923 में तत्कालिन पंजाब और हरियाणा में विधान सभा चुनाव जीतने के बाद दीन बन्धु सर छोटू राम कृषि मंत्री बने और 26 दिसम्बर 1926 तक मंत्री रहे। इस थोड़े से समय में ही उन्होने जनहित में अनेकों कार्य किये जिनमें किसानों को साहूकारों व सूदखोरों के प्रभाव से मुक्ति दिलाने के लिए कई लाभकारी कानून पारित करवाये गये जैसा कि 'पंजाब कर्जा रहित अधिनियम 1934' जिसके अनुसार अगर किसी काश्तकार ने कर्ज ली गई राशी को दोगुना या अधिक का भुगतान कर दिया है तो उसको कर्ज की राशी से स्वतः मुक्ति मिल जायेगी।

'पंजाब कर्जदार सुरक्षा अधिनियम 1936' जिसके अनुसार पूर्व मालिक के कर्ज के लिए उसके वारिस की जमीन के हस्तांतरण पर रोक लगी और खड़ी फसल व वृक्षों को बेचने व कुर्की करने पर रोक लगी। इसी प्रकार 'पंजाब राजस्व कानून 1928', 'पंजाब कर्जदाता पंजीकरण अधिनियम 1938' व 'रहनशुदा जमीनों की बहाली का अधिनियम 1938' भी पारित किये गये। इन विधेयकों का प्रभावशाली क्रियान्वयन कर्जा पीड़ित किसानों के लिए वरदान साबित हुआ जिनके तहत किसान के मूलभूत कृषि यंत्र व साधन– हल, बैल आदि की किसी भी अवस्था में कुर्की नहीं की जा सकती। राष्ट्रीय योजनाओं में भाखड़ा नग्गल डैम की प्रस्तावना का स्वरूप और उसका क्रियान्वयन चौ0 छोटूराम की सबसे बड़ी देन है। उन्होने इस योजना के निर्माण के लिए मार्च 1933 में पंजाब लेजीस्लेटिव कांउसिल में प्रस्ताव पास करवाकर इस परियोजना के क्रियान्वयन के लिए काफी बाधाओं के बावजूद अन्तिम समय तक निरन्तर प्रयास जारी रखे और अन्त में 8 जनवरी 1945 को लम्बे संघर्ष के बाद बिस्तर से ही इस परियोजना को लागू करने के आदेश करने में सफल हुए। इसके बाद चौ0 साहब काफी प्रसन्न हुए और कहने लगे कि आज मैनें अपनी सबसे प्यारी योजना भाखड़ा डैम योजना पूरी करने के लिए हस्ताक्षर कर दिये हैं।

चौ0 साहब की धर्मनिरपेक्षता व राष्ट्रवादी पार्टी सदैव राष्ट्र विरोधी तत्वों को समाप्त करने का प्रयास करती रही। वे हिन्दू–मुस्लिम एकता के प्रबल पक्षधर रहे हैं। जब मुस्लिम लीग पंजाब में युनियनिष्ट पार्टी को खत्म करने का प्रयास कर रही थी और देश विरोधी तत्वों द्वारा मजहब के नाम पर देश को बांटने की कोशिश की जा रही थी उस समय 1944 में चौ0 छोटूराम ने मुस्लिम बाहुल क्षेत्र लायलपुर में एक विशाल रैली आयोजित की जिसमें डिप्टी कमिश्नर व मुसलमान मुल्लाओं के विरोध के बावजूद भी पचास हजार लोगों ने भाग लिया और राष्ट्र विरोधी ताकतों के इरादों को नकार दिया उन्होंने 15 अगस्त 1944 को राष्ट्रपिता महात्मा गांधी को पत्र लिखकर मोहम्मद अली जिन्हा के धार्मिक कट्टरपंथी इरादों से अवगत कराया। इसी प्रकार 24 नवंबर 1944 को एक विशाल जनसभा के दौरान किसान राज और आजाद भारत की कल्पना पर लगातार 2 घंटे तक किसान–काश्तकार को उसकी ताकत का अहसास कराते हुये हिन्दु, सिख, इसाई, मुसलमान को आपसी सामाजिक भाइचारे व एकता के लिये प्रेरित किया। अगर चौ0 साहब जिन्दा होते तो देश का बटवांरा न हो पाता। चौ0 साहब बहुत ही स्पष्ट शब्दों में कहते थे **"हम मौत पसन्द करते हैं, विभाजन नहीं"**।

चौ0 छोटू राम एक अनथक व कर्मठ योद्धा थे। वे जाति–पाती के बन्धनों से मुक्त होकर किसी को भी अपना बनाने में सक्षम थे। उन्होने जाट गजटीयर नाम से पत्रिका प्रकाशित करके किसान–मजदूर वर्ग के उत्थान के लिए शिक्षा अभियान चलाकर समाज में उनकी दिक्कतों को उजागर किया। वे गरीब व जरूरतमंद बच्चों को अपनी जेब से आर्थिक सहायता तक प्रदान कर देते थे और जन साधारण तक शिक्षा का प्रसार करने के लिए गुरूकुल व जाट संस्थाओं की स्थापना की। उनके द्वारा स्थापित किये गये सर छोटू राम शिक्षा कोष से समाज के काफी लोगों ने सहायता प्राप्त की, जिनमें चौ0 चान्दराम भूतपूर्व केन्द्रीय मंत्री व पाकिस्तान के एक मात्र नोबेल पुरूस्कार विजेता डा0 अब्दुस सलाम शामिल हैं। अब्दुस सलाम ने स्वंय माना है कि सर छोटू राम शिक्षा कोष से सहायता पाये बगैर उनके लिए नोबेल पुरूस्कार पाना असम्भव था।

किसान–काश्तकार के कल्याण व हितों के लिये दीनबंधु की दूरगामी व तर्कशील सोच रही है। देश की परतन्त्रता के दौर में भी वे किसान–कमेरे वर्ग के लिये बिट्रिश साम्राज्य से अपनी तर्कशक्ति से किसान की फसल की एंडवास में वाजिब कीमत तय करा लेते थे लेकिन आज किसान वर्ग का चौ० छोटूराम व चौ० देवीलाल जैसा कोई एक छत्र नेता नही

है जिस कारण यह वर्ग सरकार की किसान विरोधी नीतियों के कारण लगातार पिछड़ रहा है और सरकार में किसान–काश्तकार वर्ग की अगुवाई करने वाला कोई भी नेता नहीं है। इसलिये आजादी के 76 वर्ष बाद भी किसान की हालत सुधरने की बजाये उनकी समस्याएं दिन प्रति दिन बढ़ती जा रही हैं और आने वाले दिनों में किसान भीख मांगने पर मजबूर हो जायेगा। एक अनुमान के अनुसार विगत 10 वर्षो के अन्दर 70000 से अधिक किसान खुदकुशी कर चुके हैं और पूरे देश में आर्थिक आतंकवाद का माहौल बन गया है। वर्ष 2001 की जनगणना के अनुसार हरियाणा में 5 एकड़ से कम जोत वाले किसानों की संख्या 67 प्रतिशत थी जो अब बढ़कर 80 प्रतिशत हो गई है। आज औसतन किसान परिवार के पास एक से अढ़ाई एकड़ भूमि ही रह गई है।

एक सर्वेक्षण के अनुसार आज 90 प्रतिशत किसान ऋण में दबे हुए हैं जो कि मुख्यतः किसान क्रेडिट कार्ड के सहारे गुजारा कर रहे हैं और फसल पकने से पूर्व ही किसान से छिन जाती है। इसके साथ ही कृषि लागतों में लगातार हो रही वृद्धि, सरकार की कामगार किसान विरोधी नीतियो व कृषि लागत से पैदावार के कम मुल्यों के कारण किसान की माली हालत दयनीय होती जा रही है जबकि राष्ट्रीय कृषि आयोग ने भी अपनी रिपोर्ट में उल्लेख किया है कि आज के हालात में 10 एकड़ से कम जोतों पर कृषि करना पूर्णतया घाटे का सौदा बन गया है। इसके बावजूद भी किसान की आर्थिक दशा को सुधारने के लिए कोई कारगर उपाय नहीं किए जा रहे हैं। युरोपियन युनियन अधिक पैदावार होने पर किसानों को फसल छुट्टी की सलाह देती है तथा उसकी फसल भरपाई किसान को युनियन करती है। इसीलिए वहां किसान खुशहाल है।

बेटी बचाओ–बेटी पढ़ाओ, आज जो नारा है वह उन्होंने अपने जीवन काल में अपने उपर कर दिखाया। समाज के दबाब के बावजूद दूसरी शादी ना की। दीन बंधु चौ० छोटू राम महिला विकास, सुरक्षा के साथ–साथ उनकी शिक्षा व सम्मान के सदैव पक्षधर रहे। एक बार रोहतक के पास खाप पंचायतों ने मिलकर आग्रह किया कि आपके सुपत्र नहीं है इसलिए आप दूसरी शादी करवा लो तो उन्होने उनको लताड़ते हुए कहा कि जब समस्त संयुक्त पंजाब के नर–नारी, सुपुत्र–सुपुत्रियां उनकी संतान हैं, तो दूसरी शादी क्यों करवांऊ।

चौधरी छोटूराम सड़कों का एक राजा था जिनका जीवन सदा निष्काम सेवा में लगा रहा। उन्होंने अपने जीवनभर की साधना को परहित में वार दिया था, अपनी सब इच्छा–अकांक्षाओं को मार, सुख–सुविधाओं को त्याग एक उद्देश्य की आपूर्ति में लगे रहे। उनकी कलम की चोट से शोषकदल धराशाही हो गया, करोड़ों शोषित–दलित तथा बेचारगी का जीवन जीने वाले आर्थिक गुलामी से मुक्त हो गए – परिणाम उनके जीवन काल में ही दिखने लगे। उनका विरोध भी डटकर हुआ। साहूकार परिवारों ने रोष रैलियां निकाली, उनकी अर्थियां तक फूकी गई और नारे लगे–'ए की होया, छोटू मोयां' लेकिन वे कभी विचलित नहीं हुये और अपने लक्ष्य की प्राप्ति कर ही माने।

दीन बंधु चौधरी छोटू राम ने किसान कामगार के अस्तित्व को बनाए रखने के लिए 1943–45 के दौरान सर सिकंदर हयात खान मंत्रीमंडल में बतौर राजस्व एवं कृषि मंत्री लाहौर में किसान कोष की स्थापना की थी और वे अपने वेतन से गरीब व जरूरतमंद बच्चों को उच्च शिक्षा के लिए वजीफा व आर्थिक सहायता प्रदान करते थे। किसान के हित के लिए वकालत करते हुए चौधरी छोटूराम वायसराय तक से भिड़ गए। उन्होने कहा था – **"नहीं चाहिए मुझे मखमल के मरमरे, मेरे लिए तो मिट्टी का हरम बनवा दो।"** गरीब–मजदूर–मजलूम–किसान की लड़ाई लड़ते हुए वे भगवान को प्यारे हो गए और आज किसान रो–रो कर चौधरी छोटूराम को पुकार रहा है–एक चांद (दीनबंधु) बता दे तुम बिन तारों (किसानों) का क्या होगा, तुम तो छोड़ गए हम सारों (गरीब–मजदूर) का क्या होगा?

आज किसान की दुर्दशा और बर्बदी को रोकने के लिए सुखे, बिमारी के बचाव हेतू केन्द्र सरकार द्वारा किसान राष्ट्र सुरक्षा कोष स्थापित करने की आवश्यकता है। सर छोटूराम ने एक किसान कोष स्थापित किया था उसी का दायरा बढ़ाकर सर छोटूराम को सच्ची श्रद्धाजंलि दी जा सकती है। इस कोष से किसान–मजदूर और मजलूम को हर संभव मुश्किल झेलने में मदद देने के प्रावधान किए जाएं तथा किसान हित में राष्ट्रीय स्तर पर आवाज उठाने हेतू किसान सुरक्षा संगठन की स्थापना की जानी चाहिए। इसके साथ–साथ आज कृषक–मजदूर वर्ग को सही दिशा दिखाने, शिक्षित करने, इनके उत्थान के लिए नई तजवीज व प्रगतिशील योजनाएं बनाकर उनको प्रभावी ढंग से लागू करने तथा देश में धर्म निरपेक्षता, अखंडता व प्रभुसता को कायम रखने के लिए फिर से एक दीनबंधु सर छोटूराम की आवश्यकता है ताकि उनके ग्रामीण समाज, किसान कृषक–मजदूर वर्ग के विकास का स्वपन साकार हो सके।

डॉ० महेन्द्र सिंह मलिक, आई.पी.एस. (सेवा निवृत)
पूर्व पुलिस महा निदेशक हरियाणा,
प्रधान अखिल भारतीय शहीद सम्मान संघर्ष समिति व
जाट सभा, चंडीगढ़ व पंचकूला एवं
चेयरमैन, चौ० छोटूराम सेवा सदन, कटरा, जम्मू

राधा स्वामी सत्संग डेरा बाबा जैमल सिंह ब्यास

– श्रीमती कृष्णा मलिक, चेयरपर्सन
चौधरी भरत सिंह मेमोरियल स्पोर्टस शिक्षण संस्थान,
निड़ानी, जीन्द

1986 में राधा स्वामी सत्संग डेरा ब्यास बाबा जैमल सिंह जी द्वारा स्थापित किया गया। 1 जनवरी 1986 से डेरे को नाम–दाम देने तथा सत्संग करने के लिये सार्वजनिक सेवा के लिए पूर्णतया समर्पित किया गया।

इसलिए मुझे पाठकों को यह बताते हुए बड़ा गौरव महसूस होता है कि ये डेरा जो आज राधा स्वामी संत्सग डेरा ब्यास के नाम से विश्व भर में जाना जाता है। एक जाट परिवार में पैदा हुए बाबा जैमल सिंह द्वारा स्थापित किया गया। बाबा जैमल सिंह जी का जन्म गांव घुमान में सरदार जोध सिंह जी जाट/किसान के घर में सन् 1839 में हुआ। मात्र 12–13 साल की उम्र में बाबा जी ने गुरू ग्रंथ साहिब और अलग–अलग जप–तप, तीर्थ–व्रत एवं कर्म–कांड आदि के ज्ञान प्राप्त करना शुरू किया और सच की खोज में निकल पड़े और इसी खोज की सत्यता की प्राप्ति के लिए जंगलों में तथा पहाड़ों आदि में घूमते रहे और अंत में स्वखोज करते–करते आगरा स्वामी शिव दयाल सिंह जी महाराज के आश्रम में पहुंच गए। उस समय उनकी उम्र 17 साल थी। अतः एक सच्चे खोजी और एक पूर्ण सतगुरू का मिलना संयोग था। यहां से उन्होंने पूर्ण ज्ञान प्राप्त किया और स्वामी जी ने उन्हें बताया कि एक सत्य यह है कि अपनी नेक कमाई से ही गुजारा करना पड़ता है। अतः स्वामी जी के आदेशानुसार सन् 1856 में ये सिख पलटन नंबर 24 में भर्ती हो गए जो आगरा में स्थित थी। भर्ती होने के पश्चात् भी ये अपनी भक्ति में सदैव लीन रहे और इन्हें संत सिपाही ही कहा जाने लगा। 34 वर्ष तक पूर्णतया सेना में निष्टावान सेवा की और अपनी मासिक तन्खवाह/पेंशन में ही गुजारा किया। 34 वर्ष की सेवा के बाद बाबा जैमल सिंह जी पेंशन लेकर आगरा से डेरा राधा स्वामी ब्यास में आ गये। यहां पहुंचने पर माता (धर्मपत्नी स्व० शिवदयाल स्वामी महाराज राधा स्वामी सत्संग, आगरा) के कहे अनुसार आपको पंजाब में संतमत नाम का प्रचार करने का हुक्म दिया था जो आज हुक्मानुसार उनका नाम और प्रसार जारी रखा। अतः माता जी ने उनके सिर पर स्वामी जी द्वारा दी गई पगड़ी बँाधी और स्वामी वाला दिया गया आसन भी बाबा जी को सौंप दिया। तत्पश्चात् बाबा जैमल सिंह ने ब्यास नदी के किनारे जहां वर्तमान डेरा है दिन–रात भजन–सत्संग–स्मिरण करने के साथ–साथ नाम देना शुरू कर दिया और लगातार उनकी महानता, रूहानी अभ्यास और सरल व स्पष्ट सत्संगों की ख्याति शीघ्र ही आसपास के गांवों में फैल गई। आपका जीवन संतमत के नियमों का आदर्श नमूना था। आपकी नेक और पवित्र रहनी/करनी लोगों को आकर्षित करने लगी। आप अपना निर्बाह अपनी पेंशन पर ही करते थे। कभी कोई वस्तु किसी से न लेते थे और न ही अपना भार किसी पर डालते (यही रीति आपके बाद आपके उत्तराधिकारियों की भी रही है।) ऐसे महात्मा के सत्संगों में लाखों सत्संगियों की भीड़ होने लगी।

उस समय तो बाबा जी एक कच्ची कोठरी में ही निर्वाह करते थे। लेकिन बाद में महाराज सावन सिंह जी के अनुरोध पर इस कच्ची कोठरी को पक्का करवा दिया गया। बाबा जी ने कहा में सदैव गुप्त रहा हूं और जिसे मैं डेरे का जानसीन मुकर्रर करूंगा। वह मुझसे भी तेजस्वी होगा और प्रकट भी रहेगा और स्वयं घोषित किया कि 28 तारीख की रात को मुझे जरूर चले जाना है और कहा कि जो सतगुरू के हुक्म और कहने के अंदर रहते है और वे जीते जी मुक्त हो जाते है और मेरे जाने के बाद डेरे के सभी काम–काज के साथ नाम–दान के कार्य बाबा सावन सिंह को दिए जांऐगे। इसी प्रकार बाबा जी 28 दिसम्बर की रात और 29 की सुबह को ज्योति–ज्योत समा गए।बाबजी ने हजारों की संख्या में संगत को नाम की बक्शीश दी। 52 वर्ष की आयु में ब्यास नदी के किनारे डेरे में स्थाई रूप से रहने लगे। 29 दिसम्बर 1903 को 69 वर्ष की आयु में ज्योति–ज्योत समा गए।

इसके बाद महाराज सावन सिंह जी राधा स्वामी सत्संग की गद्दी पर बैठे। जिन्होंने डेरे का विस्तार करने के साथ–साथ अपने देश के शहरों के अलावा दूसरे देशों में भी सत्संग घर बनाना शुरू कर दिये। उनके बाद महाराज जगत सिंह जी, उनके बाद महाराज चरण सिंह जी ने भी संतमत के प्रचार के साथ–साथ संगत को नाम देने के अलावा देश के बड़े–बड़े शहरों के साथ अन्य देशों के मुख्य शहरों में भी सत्संग घरों की स्थापना की। उनके बाद बाबा गुरिन्द्र सिंह की मौजूदा सरकार है। जिनकी देखरेख में आज बाबा डेरा जैमल सिंह ब्यास एक आदर्शबस्ती/छोटे शहर के रूप में विकसित हो रहा है। इनकी देखरेख में कोरोना के दौरान भयानक बिमारी की आपात स्थिति के दौरान ब्यास दिल्ली, इंदौर, मुम्बई, जयपुर और अन्य शहरों के जिनमें बड़े सत्संग

घर थे, सभी सत्संग भवनों को भयानक बिमारी से पीड़ित लोगों के ईलाज के लिये भारत सरकार को सौंप दिये।

अतः राधा स्वामी डेरा व्यास में न केवल जाट समाज का नाम और गौरव बढ़ाया है बल्कि पूरे विश्व को एक नया आवाम देने में पूर्णतौर से ये डेरा सक्षम है। डेरे का सब से पहला नियम कर्म ही धर्म है और केवल ईश्वर भक्ति में अटल विश्वास और एकाग्र होकर के ध्यान लगाने से मनुष्य अपना जीवन सफलतापूर्वक व्यतीत कर सकता है। नेक कमाई में पूर्ण विश्वास और जरूरतमंदों की सहायता एकमात्र उद्देश्य है। इसलिए राधा स्वामी सत्संग व्यास को धरती पर स्वर्ग की व्याख्या दी गई है। आज राधा स्वामी डेरे के करोडों अनुयायी और हजारों सत्संग भवन पूरे विश्व में तथा भारतवर्ष के कोने–कोने में है। सत्संग के समय लाखों लोगों की भीड़ उमड़ उठती है और संत्सग की प्रत्येक पहलूओं से कुशल व्यवस्था संपूर्ण अनुशासन आने जाने वाली महिलाओं, बुजुर्गों, बच्चों की पूर्ण सुरक्षा तथा खाने–पीने की व्यवस्था आज भी एक जीता–जागता पूरे विश्व में एक उदाहरण है।

पूरे विश्व में खासतौर से अपने प्रिय देश भारत में मानसिक तनाव और दिमागी बीमारियां लगातार बढ़ती जा रही है और वर्तमान में पीजीआई चंडीगढ़ में एक शोध के मुताबिक पीजीआई चंडीगढ़ में हुई केवल 22 प्रतिशत मानसिक बीमारियों के दवाईयों से रोग ठीक किए जा सकते हैं बाकि के 78 प्रतिशत रोगियों को अच्छे नैतिक परामर्श और चिंता रहित रहने की जरूरत है। अतः यदि आम नागरिक एकाग्र होकर ईश्वर भक्ति में अपना मानसिक रूप से संपूर्ण ध्यान लगाता है और निस्वार्थ होकर अपना कर्म करता है तो ये बढ़ती हुई मानसिक तनाव राधा स्वामी सत्सग डेरे द्वारा दी गई सीख से कम हो सकता है और ये लेखक का व्यक्तिगत अनुभव है।

राधा स्वामी सत्सग ब्यास पंजाब, हरियाणा, पंजाबधहिमाचल के साथ साथ देशभर के प्रत्येक राज्यों के मुख्य शहरों के साथ विदेशों में भी करोड़ों की संगत को नामदान दिया गया है और सत्संग करने व संतमत का प्रचार करने के लिये भवन स्थापित किये हैं। इसके अतिरिक्त डेरा प्राकृतिक आपदाओं से पीड़ित लोगों की सहायता के लिए करोड़ों रूपए का धन देने के इलावा अन्न और वस्त्र आदि प्रभावित क्षेत्रों में पहुंचाते हैं।

उल्लेखनीय है कि राधा स्वामी सत्संग ब्यास (आरएसएसबी) अंतरराष्ट्रीय सहयोगियों के साथ एक धार्मिक संगठन है, जो मौलिक रूप से आध्यात्मिक विश्वासों द्वारा निर्देशित है। इस संस्था की स्थापना 1891 में भारत में हुई और धीरे–धीरे इसका फैलाव अन्य देशों में भी हुआ। आज यह दुनिया भर के सैकड़ों से अधिक देशों में आध्यात्मिक सत्संग आयोजित करता है। यह एक गैर लाभकारी संगठन है जो समाज की भलाई के लिए निरंतर कार्य कर रहा है। राधा स्वामी सत्संग व्यास (आरएसएसबी) की शिक्षाओं का निष्कर्ष यह है कि मानव जीवन का एक आध्यात्मिक उद्देश्य है। हम सभी में निवास करने वाले परमपिता परमेश्वर की दिव्यता का अनुभव कराना है और जन्म–मरण से छुटकारा दिलवाकर परमपिता परमेश्वर के चरणों (सतलोक) में स्थान दिलाना है।

वेदान्त आध्यात्मिक गुरु – स्वामी विवेकानन्द

– जयपाल सिंह पूनियां, एम.ए. इतिहास,
वन मंडल अधिकारी (सेवानिवृत)

कलकत्ता के एक कुलीन बंगाली कायस्थ परिवार में जन्मे विवेकानन्द आध्यात्मिकता की ओर झुके हुए थे। वे अपने गुरु रामकृष्ण देव से काफी प्रभावित थे जिनसे उन्होंने सीखा कि सारे जीवों मे स्वयं परमात्मा का ही अस्तित्व हैं। इसलिए मानव जाति "अथेअथ" जो मनुष्य दूसरे जरूरतमन्दो की मदद करता है ये सेवा परमात्मा की ही सेवा की जाती है। रामकृष्ण की मृत्यु के बाद विवेकानन्द ने बड़े पैमाने पर भारतीय उपमहाद्वीप की यात्रा की और ब्रिटिश भारत में तत्कालीन परिस्थितियों का प्रत्यक्ष ज्ञान प्राप्त किया। बाद में विश्व धर्म संसद 1893 में भारत का प्रतिनिधित्व करने, संयुक्त राज्य अमेरिका के लिए प्रस्थान किया। विवेकानन्द ने संयुक्त राज्य अमेरिका, इंग्लैंड और यूरोप में हिंदू दर्शन के सिद्धान्तों का प्रसार किया और कई सार्वजनिक और निजी व्याख्यानों का आयोजन किया। भारत में विवेकानन्द को एक देशभक्त सन्यासी के रूप में माना जाता है और उनके जन्मदिन को राष्ट्रीय युवा दिवस के रूप में मनाया जाता है।

स्वामी विवेकानन्द का जन्म 12 जनवरी, 1863 में कलकता के एक कायस्थ परिवार में हुआ था। स्वामी विवेकानन्द वेदान्त के विख्यात और प्रभावशाली आध्यात्मिक गुरु थे। उन्होंने अमेरिका स्थित शिकागो में सन् 1893 में आयोजित विश्व धर्म महासभा में भारत की ओर से सनातन धर्म का प्रतिनिधित्व किया था। भारत का आध्यात्मिकता से परिपूर्ण वेदान्त दर्शन अमेरिका और यूरोप के हर एक देश में स्वामी विवेकानन्द के प्रसार/प्रचार प्रवकत्ता के कारण ही पहुँचा। उन्होंने रामकृष्ण मिशन की स्थापना की थी जो आज भी अपना काम कर रहा है। वे रामकृष्ण परमहंस के सुयोग्य

शिष्य थे। उन्हें 2 मिनट का समय दिया गया था किन्तु उन्हें प्रमुख रूप से उनके भाषण का आरम्भ "मेरे अमेरिकी बहनों एवं भाइयों" के साथ प्रारम्भ करने के लिये जाना जाता है। उनके संबोधन के इस प्रथम वाक्य ने सबका दिल जीत लिया था। दर्शकों ने उनको बोलने के लिए और समय देने की मांग उठाई और उनके सम्बोधन से दर्शक बहुत प्रभावित हुए।

एक बार स्वामी विवेकानन्द अपने आश्रम में सो रहे थे। कि तभी एक व्यक्ति उनके पास आया जो कि बहुत दुखी था और आते ही स्वामी विवेकानन्द के चरणों में गिर पड़ा और बोला महाराज मैं अपने जीवन में खूब मेहनत करता हूँ हर काम खूब मन लगाकर भी करता हूँ फिर भी आज तक मैं कभी सफल व्यक्ति नहीं बन पाया। उस व्यक्ति कि बाते सुनकर स्वामी विवेकानंद ने कहा ठीक है। आप मेरे इस पालतू कुत्ते को थोड़ी देर तक घुमाकर लाये तब तक आपके समस्या का समाधान ढूँढ़ता हूँ। इतना कहने के बाद वह व्यक्ति कुत्ते को घुमाने के लिए चला गया। और फिर कुछ समय बीतने के बाद वह व्यक्ति वापस आया। तो स्वामी विवेकानन्द ने उस व्यक्ति से पूछा की यह कुत्ता इतना हाँफ क्यों रहा है। जबकि तुम थोड़े से भी थके हुए नहीं लग रहे हो आखिर ऐसा क्या हुआ ?

इस पर उस व्यक्ति ने कहा कि मैं तो सीधा अपने रास्ते पर चल रहा था जबकि यह कुत्ता इधर उधर रास्ते भर भागता रहा और कुछ भी देखता तो उधर ही दौड़ जाता था। जिसके कारण यह इतना थक गया है। इस पर स्वामी विवेकानन्द ने मुस्कुराते हुए कहा बस यही तुम्हारे प्रश्नों का जवाब है। तुम्हारी सफलता की मंजिल तो तुम्हारे सामने ही होती है। लेकिन तुम अपने मंजिल के बजाय इधर उधर भागते हो जिससे तुम अपने जीवन में कभी सफल नही हो पाए, यह बात सुनकर उस व्यक्ति को समझ में आ गया था। की यदि सफल होना है तो हमे अपने मंजिल पर ध्यान देना चाहिए।

स्वामी विवेकानन्द के पिता विश्वनाथ दत्त कलकत्ता हाईकोर्ट के एक प्रसिद्ध वकील थे। दुर्गाचरण दत्ता, (विवेकानन्द के दादा) संस्कृत और फारसी के विद्वान थे उन्होंने अपने परिवार को 25 वर्ष की आयु में छोड़ दिया और एक साधु बन गए। उनकी माता भुवनेश्वरी देवी धार्मिक विचारों की महिला थीं। उनका अधिकांश समय भगवान शिव की पूजा–अर्चना में व्यतीत होता था। विवेकानन्द के पिता और उनकी माँ के धार्मिक, प्रगतिशील व तर्कसंगत रवैया ने उनकी सोच और व्यक्तित्व को आकार देने में सहायता की।

बचपन से ही विवेकानन्द अत्यन्त कुशाग्र बुद्धि के तो थे ही नटखट भी थे। अपने साथी बच्चों के साथ वे खूब शरारत करते और मौका मिलने पर अपने अध्यापकों के साथ भी शरारत करने से नहीं चूकते थे। उनके घर में नियमपूर्वक रोज पूजा–पाठ होता था धार्मिक प्रवृत्ति की होने के कारण माता भुवनेश्वरी देवी को पुराण, रामायण, महाभारत आदि की कथा सुनने का बहुत शौक था। कथावाचक बराबर इनके घर आते रहते थे। नियमित रूप से भजन–कीर्तन भी होता रहता था। परिवार के धार्मिक एवं आध्यात्मिक वातावरण के प्रभाव से बालक विवेकानन्द के मन में बचपन से ही धर्म एवं अध्यात्म के संस्कार गहरे होते गये। माता–पिता के संस्कारों और धार्मिक वातावरण के कारण बालक के मन में बचपन से ही ईश्वर को जानने और उसे प्राप्त करने की लालसा दिखायी देने लगी थी। ईश्वर के बारे में जानने की उत्सुकता में कभी–कभी वे ऐसे प्रश्न पूछ बैठते थे कि इनके माता–पिता और कथावाचक पण्डित तक चक्कर में पड़ जाते थे।

सन् 1871 में, आठ साल की उम्र में, विवेकानन्द ने ईश्वर चंद्र विद्यासागर के मेट्रोपोलिटन संस्थान में दाखिला लिया जहाँ उन्होंने पढ़ाई की। 1877 में उनका परिवार रायपुर चला गया। 1879 में, कलकत्ता में अपने परिवार की वापसी के बाद, वह एकमात्र छात्र थे जिन्होंने प्रेसीडेंसी कॉलेज की प्रवेश परीक्षा में प्रथम डिवीजन में अंक प्राप्त किये।

वे दर्शन, धर्म, इतिहास, सामाजिक विज्ञान, कला और साहित्य सहित कई विषयों के एक उत्साही पाठक थे। इनकी वेद, उपनिषद, भगवद् गीता, रामायण, महाभारत और पुराणों के अतिरिक्त अनेक हिन्दू शास्त्रों को पढ़ने में गहन रूचि थी। विवेकानन्द ने भारतीय शास्त्रीय संगीत में भी परीक्षण लिया था, और ये नियमित रूप से शारीरिक व्यायाम में व खेलों में भाग लिया करते थे। विवेकानन्द ने पश्चिमी तर्क, पश्चिमी दर्शन और यूरोपीय इतिहास का अध्ययन जनरल असेम्बली इंस्टिट्यूशन (अब स्कॉटिश चर्च कॉलेज) में किया। 1881 में इन्होंने ललित कला की परीक्षा उत्तीर्ण की, और 1884 में कला स्नातक की डिग्री पूरी कर ली।

विवेकानन्द ने डेविड ह्यूम, इमैनुएल कांट, जोहान गोटलिब फिच, बारूक स्पिनोजा, जोर्ज डब्लू एच हेजेल, आर्थर स्कूपइन्हार, ऑगस्ट कॉम्टे, जॉन स्टुअर्ट मिल और चार्ल्स डार्विन के कामों का अध्ययन किया। उन्होंने स्पेंसर की किताब एजुकेशन (1860) का बंगाली में अनुवाद किया। ये हर्बर्ट स्पेंसर के विकासवाद से काफी प्रभावित थे। पश्चिम दार्शनिकों के अध्यन के साथ ही इन्होंने संस्कृत ग्रंथों और बंगाली साहित्य को भी सीखा। विलियम हेस्टी (महासभा संस्था के प्रिंसिपल) ने लिखा, 'विवेकानन्द वास्तव में एक जीनियस है। जैसी प्रतिभा वाला कोई–कोई बालक होता है। यहाँ तक की जर्मन

विश्वविद्यालयों के दार्शनिक छात्रों में भी नहीं।' अनेक बार इन्हें श्रुतिधर (विलक्षण स्मृति वाला एक व्यक्ति) भी कहा गया है।

25 वर्ष की अवस्था में विवेकानन्द ने गेरुआ वस्त्र धारण कर लिए थे। तत्पश्चात उन्होंने पैदल ही पूरे भारतवर्ष की यात्रा की। विवेकानंद ने 31 मई 1893 को अपनी यात्रा शुरू की और जापान के कई शहरों (नागासाकी, कोबे, योकोहामा, ओसाका, क्योटो और टोक्यो समेत) का दौरा किया,चीन और कनाडा होते हुए अमेरिका के शिकागो पहुँचे सन् 1893 में शिकागो (अमेरिका) में विश्व धर्म परिषद् हो रही थी। स्वामी विवेकानन्द उसमें भारत की ओर सनातन धर्म वक्ता प्रतिनिधि के रूप में पहुँचे। यूरोप–अमरीका के लोग उस समय पराधीन भारतवासियों को बहुत हीन दृष्टि से देखते थे। वहाँ लोगों ने बहुत प्रयत्न किया कि स्वामी विवेकानन्द को सर्वधर्म परिषद् में बोलने का समय ही न मिले। परंतु (परन्तु) एक अमेरिकन प्रोफेसर के प्रयास से उन्हें केवल 2 मिनट का समय मिला। उस परिषद् में उनके विचार सुनकर सभी विद्वान चकित हो गये। फिर तो अमरीका में उनका अत्यधिक स्वागत हुआ। वहाँ उनके भक्तों का एक बड़ा समुदाय बन गया। तीन वर्ष वे अमरीका में रहे और वहाँ के लोगों को भारतीय तत्वज्ञान की अद्भुत ज्योति प्रदान की। उनकी वक्तव्य–शैली तथा ज्ञान को देखते हुए वहाँ के मीडिया ने उन्हें साइक्लॉनिक हिन्दू का नाम दिया। "अध्यात्म–विद्या और भारतीय दर्शन के बिना विश्व अनाथ हो जायेगा" यह स्वामी विवेकानन्द का दृढ़ विश्वास था। अमरीका में उन्होंने रामकृष्ण मिशन की अनेक शाखाएँ स्थापित कीं। अनेक अमरीकी विद्वानों ने उनका शिष्यत्व ग्रहण किया। वे सदा अपने को "गरीबों का सेवक" कहते थे। भारत के गौरव को देश–देशांतरों (देश–देशान्तर) में उज्ज्वल करने का उन्होंने सदा प्रयत्न किया।

स्वामी विवेकानन्द ऐसी शिक्षा चाहते थे जिससे बालक का सर्वांगीण विकास हो सके। बालक की शिक्षा का उद्देश्य उसको आत्मनिर्भर बनाकर अपने पैरों पर खड़ा करना है। आप उस शिक्षा को अच्छा मानते है जो जनसाधारण को जीवन संघर्ष के लिए तैयार नहीं करती, जो चरित्र निर्माण नहीं करती, जो समाज सेवा की भावना विकसित नहीं करती तथा जो शेर जैसा साहस पैदा नहीं कर सकती

अतः स्वामी सैद्धान्तिक शिक्षा के पक्ष में नहीं थे, वे व्यावहारिक शिक्षा को व्यक्ति के लिए उपयोगी मानते थे। व्यक्ति की शिक्षा ही उसे भविष्य के लिए तैयार करती है, इसलिए शिक्षा में उन तत्वों का होना आवश्यक है, जो उसके भविष्य के लिए महत्वपूर्ण हो। स्वामी विवेकानन्द के शब्दों में, तुमको कार्य के सभी क्षेत्रों में व्यावहारिक बनना पड़ेगा।

स्वामी शिक्षा द्वारा लौकिक एवं पारलौकिक दोनों जीवन के लिए तैयार करना चाहते थे। लौकिक दृष्टि से शिक्षा के सम्बन्ध में उन्होंने कहा है कि "हमें ऐसी शिक्षा चाहिए, जिससे चरित्र का गठन हो, मन का बल बढ़े, बुद्धि का विकास हो और व्यक्ति स्वावलम्बी बने।" पारलौकिक दृष्टि से उन्होंने कहा है कि "शिक्षा मनुष्य की अन्तर्निहित पूर्णता की अभिव्यक्ति है।"

विवेकानंद ओजस्वी और सारगर्भित व्याख्यानों की प्रसिद्धि विश्व भर में है। जीवन के अन्तिम दिन उन्होंने शुक्ल यजुर्वेद की व्याख्या की और कहा– एक और विवेकानन्द चाहिये, यह समझाने के लिये कि इस विवेकानन्द ने अब तक क्या किया है। उनके शिष्यों के अनुसार जीवन के अन्तिम दिन 4 जुलाई 1902 को भी उन्होंने अपनी ध्यान करने की दिनचर्या को नहीं बदला और प्रातः दो–तीन घण्टे ध्यान किया और ध्यानावस्था में ही अपने ब्रह्मरन्ध्र को भेदकर महासमाधि ले ली। बेलूर में गंगा तट पर चन्दन की चिता पर उनकी अंत्येष्टि की गई। इसी गंगा तट के दूसरी ओर उनके गुरु रामकृष्ण परमहंस का सोलह वर्ष पूर्व अन्तिम संस्कार हुआ था।

उनके शिष्यों और अनुयायियों ने उनकी स्मृति में वहाँ एक मन्दिर बनवाया और समूचे विश्व में विवेकानन्द तथा उनके गुरु रामकृष्ण के सन्देशों के प्रचार के लिये 130 से अधिक केन्द्रों की स्थापना की। इनका एक प्रसिद्ध कथन था "उठो जागो और लक्ष्य प्राप्ति तक मत रुको।"

1857 के क्रान्तिकारी महान योद्धा राजा नाहर सिंह (1823-1858)

– बी.एस. गिल, सचिव
जाट सभा

राजा नाहर सिंह बल्लभगढ़, राजा जो एक महान योद्धा होने के सथ–साथ प्रथम स्वतंत्रता संग्राम विद्रोह में भाग लेने वाले एक महान क्रान्तिकारी थे क्योंकि वे अग्रणीय क्रान्तिकारियों में शामिल थे। इन्होंने बहादुरशाह जफर शाह को दिल्ली का राजा बनाया लेकिन दिल्ली क्षेत्र रक्षा की जिम्मेदारी राजा नाहर सिंह को ही सौंपी गई। क्योंकि वे काफी बहादुर थे।

हरियाणा के फरीदाबाद जिले में बल्लभगढ़ की रियासत के एक जाट राजा थे। उनके पूर्वज तेवतिया गोत्र के जाट थे जिन्होंने 1739 के आसपास फरीदाबाद

में एक किले का निर्माण किया था। वह 1857 के भारतीय विद्रोह में शामिल थे। बल्लभगढ़,फरीदाबाद का छोटा राज्य दिल्ली से केवल 20 मील की दूरी पर है। उनके महल को हरियाणा सरकार ने हरियाणा पर्यटन के अधीन ले लिया है। फरीदाबाद के नाहर सिंह स्टेडियम का नाम उनके नाम पर रखा गया है। वायलेट लाइन में बल्लभगढ़ मेट्रो स्टेशन का नाम भी राजा नाहर सिंह के नाम पर रखा गया है।

बल्लभगढ़ राज्य एक महत्वपूर्ण रियासत थी जिसकी स्थापना तेवतिया वंश के जाटों ने की थी। बलराम सिंह तेवतिया, जो भरतपुर राज्य के महाराजा सूरज मल सिनसिनवार के बहनोई थे, बल्लभगढ़ राज्य के पहले शासक थे, और नाहर सिंह उनके वंशज थे। उनके शिक्षकों में पंडित कुलकर्णी और मौलवी रहमान खान शामिल थे। उनके पिता की मृत्यु 1830 में हुई, जब वे लगभग 9 वर्ष के थे। उन्हें अपने चाचा नवल सिंह द्वारा राज कार्यों में लाया गया था, जिन्होंने राज्य के मामलों को चलाने की जिम्मेदारी संभाली। नाहर सिंह की ताजपोशी 1839 में हुई थी।

बल्लभगढ़ के राजा नाहर सिंह 32 साल के थे, जब उन्होंने 1857 के विद्रोह के दौरान अपनी छोटी सेना को अंग्रेजों के खिलाफ मैदान में भेज दिया था। ब्रिटिश वर्चस्व को स्वीकार करते हुए खुद को बचाने की पेशकश से इनकार करने पर उन्हें 9 जनवरी 1858 को चांदनी चौक में लटका दिया गया और उनकी संपत्ति को जब्त कर लिया गया। उन्हें औपनिवेशिक शासकों द्वारा धन, प्रावधानों और हथियारों के साथ विद्रोह में मदद करने और पलवल में सेना भेजने के लिए भारत में ब्रिटिश सरकार से विद्रोह करने का आरोप लगाया गया था। अंग्रेजों ने उन्हें सजा सुनाई जब तक उनकी मृत्यु नहीं हो जाती, तब तक उनकी उनकी संपत्ति और हर विवरण के प्रभावों को रोक दिया जाता है। उनकी मृत्यु के बाद उनका राज्य अंग्रेजों ने अपने कब्जे में ले लिया और इस तरह बल्लभगढ़ के जाट राज्य पर कब्जा कर लिया। गुलाब सिंह सैनी, राजा नाहर की सेनाओं के कमांडर भूरा सिंह वाल्मीकि ने अंग्रेजों के खिलाफ बल्लभगढ़ सेना का नेतृत्व किया, जोधा सिंह के पुत्र थे। राजा नाहर सिंह के साथ 9 जनवरी 1858 को चांदनी चौक में गुलाब को भी फांसी दी गई थी।

बल्लभगढ़ की स्थापना करने वालों के वंशज राजा नाहर सिंह को संधि का झांसा देकर दिल्ली बुलाने के बाद कैद किया गया था और 9 जनवरी 1858 में चांदनी चौक (दिल्ली) में अंग्रेजों ने फांसी दे दी थी। पहले स्वतंत्रता संग्राम में नाहर सिंह ने अग्रणी भूमिका निभाई थी। इसके बाद से ही 9 जनवरी को राजा नाहर सिंह के बलिदान दिवस के रूप में मनाया जाता है। मंगलवार को अखिल भारतीय जाट महासभा की ओर से बल्लभगढ़ नाहर सिंह पार्क के शहीद स्मारक पर भी प्रति वर्ष शहीदी दिवस मनाया जाएगा।

नाहर सिंह काफी बहादुर थे और उन्होंने अंग्रेजी सेना के साथ जमकर मुकाबला किया था। दक्षिण हरियाणा की तरफ से उन्होंने दिल्ली की रक्षा की और अंग्रेजी सेना को हार का सामना करना पड़ा। अंग्रेजी शासक नाहर सिंह के पराक्रम से परेशान थे, जिसके चलते उन्होंने एक षड्यंत्र रचा। उन्होंने एक दूत भेजकर राजा नाहर सिंह को दिल्ली बुलाया और कहा कि उनकी मौजूदगी में बहादुरशाह जफर से संधि करना चाहते हैं। जैसे ही नाहर सिंह लाल किले में घुसे तो अंग्रेजी सेनाओं ने धोखे से उन्हें गिरतार कर लिया। गिरतारी के बाद राजा नाहर सिंह पर सरकारी खजाना लूटने का मुकदमा इलाहाबाद कोर्ट में चलाया गया। सरकारी खजाने को लूटने के आरोप में दोषी ठहराते हुए फांसी की सजा सुनाई गई। 9 जनवरी, 1858 को 36 साल की उम्र में राजा नाहर सिंह को चांदनी चौक में फांसी दी गई। उनके साथ उनके साथी गुलाब सिंह सैनी और भूरा सिंह को भी फांसी दी गई थी। देश के लिए राजा नाहर सिंह के बलिदान को कभी नहीं भुलाया जा सकता, इसलिए शहर की कई संस्थाएं उनकी शहादत में हर साल कार्यक्रमों का आयोजन करती हैं। बल्लभगढ़ शहर में आज भी राजा नाहर सिंह का महल है। उनके प्रपौत्र राजकुमार तेवतिया, सुनील तेवतिया व अनिल तेवतिया बल्लभगढ़ में राजा नाहर सिंह पैलेस में आज भी राजा से संबंधित यादें संजोए हुए हैं। हरियाणा सरकार ने महल में कॉलेज खेल दिया।

भारतेन्दु महाराजा जवाहर सिंह

(1728-1768)

– लक्ष्मण सिंह फौगाट

महाराजा जवाहर सिंह का शासन काल सन् 1763 से सन 1768 तक रहा था।महाराजा जवाहर सिंह महाराजा सूरजमल के प्रतापी ज्येष्ठ पुत्र थे। वह अपने बाबा/दादा की तरह वीर, साहसी और प्रतापी राजा थे।

महाराज सूरजमल की जिस समय मृत्यु हुई थी, उस समय भरतपुर राज्य का विस्तार और वैभव इस प्रकार था– आगरा, धौलपुर, मैनपुरी, हाथरस, अलीगढ़, एटा, मेरठ, रोहतक, फर्रुखनगर, मेवात, रेवाड़ी, गुड़गांव और मथुरा के जिले उनके अधिकार में थे। गंगाजी का दाहिना किनारा इस राज्य की पूर्वी सरहद, चम्बल दक्षिणी, जयपुर का राज्य पश्चिमी और देहली का सूबा उत्तरी सरहद थे। इसकी लम्बाई पूर्व से पश्चिम की ओर 200 मील और उत्तर से दक्षिण की ओर 150 मील के करीब थी।

खजाने और माल के विषय में जो कि सूरजमल ने अपने उत्तराधिकारी के लिए छोड़ा, भिन्न–भिन्न मत हैं। कुछ इसे नौ करोड़ बताते हैं और कुछ कम। जैसा कि मुझे मालूम हुआ है उसका खर्च 65 लाख से अधिक और 60 लाख सलाना से कम नहीं था और राज्य के अन्तिम 5–6 वर्षो में उसकी वार्षिक मालगुजारी एक करोड़ पचैहत्तर लाख से कम नहीं थी। उसने अपने पूर्वजों के खजाने में 5–6 करोड़ रुपया जमा कर दिया। जवाहरसिंह के गद्दी पर बैठने के समय 10 करोड़ रुपया जाटों के खजाने में था। बहुत–सा गढ़ा हुआ न जाने कहां है। यहां के गुप्त खजाने में अब भी बहुत अमूल्य पदार्थ और देहली, आगरे की लूट की अद्वितीय तथा छंटी हुई चीजें जिनका मिलना अब बहुत मुश्किल है बताई जाती हैं। खजाने के सिवाय सूरजमल ने अपने उत्तराधिकारी के लिए 5000 घोड़े, 60 हाथी, 15,000 सवार, 25000 से अधिक पैदल, 300 से अधिक तोपें और उतनी ही बारूद–खाना तथा अन्य युद्ध का सामान छोड़ा।

पुष्कर स्नान :–

महाराजा जवाहर सिंह अपनी सेना के साथ गाजेबाजो व नगाड़े बजाता हुआ 6 नवम्बर 1767 को पुष्कर अपनी माता किशोरी देवी को स्नान करवाने के लिये पहुंच गया। यहा पर राजपूतो के सिवाय किसी और को स्नान की इजाजत नहीं थी लेकिन किसी भी राजपूत की हिम्मत नहीं हुई की जवाहर सिंह को रोक दे सभी राजपूत दुम दबाकर अपने महलों में घुसकर तमासा देखते रह गये ये जाटों के शीर्ष का उच्चतम शिखर था। जिसको जवाहर सिंह ने ओर ऊंचा कर दिया। महारानी ने सेना सहित पुष्कर में स्थान किया। यहां पर जाटो के नाम से एक घाट और मन्दिर बनवाया और गरीबो को बढ़चढ़ कर दान दिया। इतना दान दिया कि आज तक कोई भी राजपूत या कोई अन्य इतना दान नहीं दे पाया।

राजपूतों की स्त्रियों के अतिरिक्त कोई भी औरत लाख की बनी चूड़ियां नहीं पहन सकती थी और अपने घाघरों व दामन में नाड़े नही डाल सकती थी। केवल गूंज की रस्सी बनाकर ही घाघरे व दामन के ऊपर बांधा करती थी। पुरुषों को सिर पर पगड़ी बाधने की आज्ञा नहीं थी राजपूतों के सामने जाट चारपाई पर नहीं बैठ सकते थे। महाराजा जवाहर सिंह ने आम जनता पर से ये पाबन्दियां हटाने के लिये अजमेर शहर से कई लाखों की मात्रा में लाख की बनी चूड़ियां, नाड़े और पगडियां आदि खरीद कर पुष्कर में स्नान करके सभी स्त्री व पुरुषों में मुत बांट दी। लाखें औरतों को मुत नाडे डलवाये, चूड़िया पहनाई तथा लाखो लोगो को पगड़ियां बन्धवाई। कहते है महाराजा ने लाख की चूड़ियां बेचने वाले व्यापारी से पूछा तो उसने उत्तर दिया कि महाराज ये आपके काम की नहीं, ये तो लाख की है। महाराज ने मूल्य समझकर 1 लाख रुपये उसको देकर वे सारी चूडिया ही खरीद ली और सभी औरतों में बांट दी। आम सभी जनता को पक्के घाटों पर स्नान करने की आज्ञा महाराजा जवाहर सिंह ने दी और उपरोक्त नहाने व रहन–सहन संबंधी गंदी प्रथाओं के विरूद्ध घौर निन्दा करके लोगों को राहत दिलवाई। राजपूत इस प्रकरण से अपनी बेईज्जती महसूस करने लगे और इन गंदी प्रथाओं को फिर बढ़ावा नहीं दिया। महारानी किशोरी देवी को सोने से तौला गया और महारानी ने ये सोना सभी गरीबों में बांट दिया।

महाराजा जवाहर सिंह के तबेले में 12,000 घोड़े उतने ही चुनीदा सवारों सहित थे जिनको कि उसने दूसरों के घुड़सवारों पर निशाना लगाने का और फिर अपनी बन्दूकें सुरक्षित होकर भरने के लिए चक्कर खाने का अभ्यास कराया था। यह आदमी रोजाना के अभ्यास से इतने निपुण और भयानक निशानेबाज और मार्च में इतने चतुर बन गए थे कि हिन्दुस्तान में कोई भी ऐसी सेना नहीं थी जो खुले मैदान में उनका सामना कर सके और न ऐसे राजा के विरुद्ध लड़ाई मोल लेना ही फायदा के लिए सम्भव समझा जाता था।महाराजा जवाहर सिंह ने अपने पिता की जीवित अवस्था में सैकड़ो युद्धों में विजय प्राप्त की थी। जब महाराजा सूरजमल की मृत्यु धोखे से दिल्ली विजय अभियान में हो गयी तब रानी किशोरी ने जवाहर सिंह को भरतपुर की गद्दी पर बैठा कर अपने पिता की मृत्यु का बदला लेने के लिए दिल्ली पर आक्रमण करने का आदेश दिया दिल्ली लालकिले पर

अधिकार करने के लिए उसके भीतर घुसे हुए मुस्लिम सैनिकों को जीतना था। इसके लिए महाराजा ने आक्रमण किया। जवाहरसिंह ने शाहदरा के निकट यमुना तट से तोपों के गोले लालकिले पर बरसाने शुरु कर दिये जिनसे किले एवं शत्रु को काफी हानि पहुंची। दूसरी ओर भरतपुर सेना इस किले के दरवाजों को तोड़कर अन्दर घुसने का प्रयत्न कर रही थी। परन्तु किले के बन्द दरवाजे के किवाड़ों पर लम्बे–लम्बे नोकदार बाहर को उभरे हुए लोहे के मजबूत भाले लगे हुए थे, जो हाथी की टक्कर से टूट सकते थे। किन्तु हाथी इन भालों से डरकर उल्टे हट गये। यह कार्य बिना देरी किये करना था। अतः और साधन न मिलने पर महारानी किशोरी के भाई होने के नाते महारानी किशोरी के कहने पर भात भरने का समय आ गया है। इस लिए भात भरने के रूप में पुष्कर सिंह (पाखरिया) पाखरिया वीर योद्धा अपनी छाती किवाड़ों के भालों के साथ लगाकर खड़ा हो गया और पीलवान से कहकर हाथी की टक्कर अपनी कमर पर मरवा ली। दरवाजा तो टूटकर खुल गया परन्तु वीर योद्धा पाखरिया वहीं पर वीरगति को प्राप्त हो गया। लाल किले पर लगे चित्तौड़ दुर्ग से लाये अष्टधातु का दरवाजा भी उखाड़कर भरतपुर ले आए।इस प्रसंग का उल्लेख इतिहासकार दीनानाथ दुबे की पुस्तक "भारत के दुर्ग" तथा डॉ. राघवेन्द्र मनोहर की पुस्तक "राजस्थान के प्रमुख दुर्ग" में भी आता है।

शेर–ए–हिन्द वीर जवाहर सिंह दिल्ली विजय कर भरतपुर महलों में लोटे तो उनसे माँ किशोरी ने पूछा की बेटा दिल्ली विजय से तुम कौनसी अनमोल वस्तु लाये हो तो वीर जवाहर सिंह ने जबाब दिया उन चित्तोड़ कोट के किवाड़ो को लाया हूँ जिनपर वीर मामा पाखरिया ने बलिदान दिया वीर जवाहर से माता किशोरी पूछती है – कुछ सुना बात दिल्ली रण की सौगात वहां से क्या लाया बेटा मेरे वचनों पर ही तूने अत्यन्य कष्ट पाया। उज्ज्वल इतिहास प्रखर चित्तोड़ कोट के माँ किवाड़ लाया हूँ तभी यह उद्घोस अंबर में गूंजा था श्री गोवर्धन गिर्राज की जय जवाहर सिंह की जय वीर शहीद पारवरिया तोमर की जय जाटों के सक्ल समाज की जय रन अजय भरतपुर राज की जय।

कुछ इतिहासकारों के कथन :–

1. दिलीप सिंह अहलावत, महाराजा जवाहर सिंह व पाखरिया वीर के बारे में लिखते है – तोमर खूंटेल जाटों में पुष्करसिंह अथवा पाखरिया नाम का एक बड़ा प्रसिद्ध शहीद हुआ है। यह वीर योद्धा महाराजा जवाहरसिंह की दिल्ली विजय में साथ था। यह लालकिले के द्वार की लोहे की सलाखें पकड़कर इसलिए झूल गया था क्योंकी सलाखों की नोकों पर टकराने से हाथी चिंघाड़ मार कर दूर भागते थे। उस वीर मे इस अनुपम बलिदान से ही अन्दर की अर्गला टूट गई और अष्टधाती कपाट खुल गये। देहली विजय में भारी श्रेय इसी वीर को दिया गया है। इस पर भारतवर्ष के खूंटेल तथा जाट जाति आज भी गर्व करती हैं।

2. भरतपुर महाराजा ब्रिजेन्द्र सिंह के दरबार में रचित ब्रिजेन्द्र वंश भास्कर नामक ग्रन्थ में भी दिल्ली के दरवाजो पर बलिदान देने वाले वीर का नाम खुटेल पाखारिया अंकित है राजपरिवार भी पाखारिया खुटेल को भी बलिदानी मानता है।

3. जाटों के जोहर नामक किताब में भी पंडित आचार्य गोपालदास कौशिक जी ने तथा जाटों के नविन इतिहास में उपेन्द्र नाथ शर्मा ने भी दिल्ली विजय पर खुटेल पाखरिया के बलिदान होने की बात लिखी है।

'तेरे बाप की पगड़ी पड़ी बोझड़ों में और तू पग्गड़ बांधे हांडै, जा पूत तुझे उस दिन मानूंगी जिस दिन दिल्ली तोड़ देगा'

यही वह उदगार थे जब महाराजा सूरज सुजान (सूरजमल) को मुगलों व पेशवाओं ने धोखे से मरवाया तो होडल की राजकुमारी व भरतपुर (लोहागढ़) की पटराणी महारानी किशोरी जी के मुख से उदगार हुए थे और उनका बेटा भारतेन्दु जवाहरमल जा चढ़ा था दिल्ली की छाती पर दिनांक 20 जनवरी को उनकी जयन्ती मनाई जाती है।

आज 7 अगस्त 1768 उनकी पुण्यतिथि है। उनको नमन करते हुए उनके नाम जो कीर्तिमान हैं उनका जिक्र कर लेते हैं :–

1) खिलजी के वक्त से चित्तौड़गढ़ किले के अष्टधातु के दरवाजे जो खिलजी ने वहाँ से उखाड़ लाकर दिल्ली लालकिले में लगवा दिए थे, आप उनको उखाड़ भरतपुर ले गए और आजतक वहां के दिल्ली गेट की शोभा बढ़ा रहे हैं।

2) हार के बाद मुगल बादशाह ने अपनी बेटी से ब्याह का ऑफर दिया परन्तु आपने राजकुमारी, अपने मित्र फ्रेंच कैप्टेन समरू को प्रणवा दी।

3) पानीपत की तीसरी लड़ाई में पुणे के पेशवाओं को हराने वाले अहमदशाह अब्दाली को जब पता लगा कि महाराजा सूरज सुजान का बेटा दिल्ली लालकिला फिर से जीत लिया है तो वह हक्काबक्का रह गया।

4) इस जीत को 'दिल्ली की लूट' व 'जाटों के गदर' के नाम से भी जाना जाता है।

5) महाराजा सूरज सुजान की दिल्ली पर दो जीतों के बाद यह अल्प समय में तीसरी जीत थी, जिसके चलते कहावत चल पड़ी कि 'दिल्ली' तो जाटों की बहु है।

6) महाराणी किशोरी जी खुद इस लड़ाई में साथ आई थी व अपने बेटे का मार्गदर्शन कर रही थी। ना इतनी डेठी वीरांगना कभी देखी ना सुनी ये माइथोलॉजी तक में नहीं। ऐसे अफलातूनी पुरखों को पुनः पुनः नमन।

16वीं सदी के महानायक क्रान्तिकारी वीर गोकूला जाट

– नवीन सहरावत

तिलपत गांव की कहानी है जो महाभारत के समय की बात है। जब दुर्योधन ने पांडवों को उनका राजपाट न लौटाने के लिए अपने अभिमान/घमण्ड़ के कारण कुछ भी न देने की ढान ली तब श्रीकृष्ण जी ने महाराजा दृतराष्ट्र व भीष्मपितामह से पांडव के लिए केवल पांच गांव मांगे थे उन्हीं में से एक तिलपत गांव भी शामिल था इसी गांव में 16वीं सदी के महानायक महान क्रांतिकारी वीरवर गोकूलं ने एक जाट परिवार के घर में जन्म लिया था। उस समय मुगलों का राज होता था और उसमें राजा औंरगजेब हिन्दुओं को जबरन मुस्लमान बना रहा था। तभी महान क्रांतिकारी महावीर गोकुला जाट अपने 7000 साथियों को लेकर राजा औंरगजेब से जा लड़ा। जहां एक भंयकर युद्ध हुआ। यहीं से मुगल शासन का अन्त होना शुरू हो गया था। 1 जनवरी 1670 को वीर गोकुला जाट ने हिन्दुओं की रक्षा करते हुए अपना बलिदान दे दिया। उनका बलिदान 1 जनवरी 1670 को हुआ। तिलपत के एक जाट जमींदार थे। जो अब भारत के राज्य हरियाणा में पड़ता है। पैदा हुए चार बेटों में से दूसरे नम्बर पर जिनका जन्म से नाम गोकुला था। गोकुला ने मुगल साम्राज्य की शक्ति को चुनौती देने वाले जाटों को नेतृत्व प्रदान किया। क्योंकि उस समय राजा ओंरगजेब हिन्दुओं का धर्म परिवर्तन करवाकर मुस्लमान बना रहा था जिसके गिरोह में वीर गोकुला जाट ने अपने साथियों के साथ तिलपत की लड़ाई 1669 में जाटों और मुगल साम्राज्य के बीच लड़ी।

मुगल सूबेदार लगातार सैन्य विस्तार के कारण मुगल साम्राज्य की खराब व वित्तीय स्थिति के कारण इस क्षेत्र के किसानों पर भारी कर लगा रहे थे। उपमहाद्वीप के दक्षिणी क्षेत्र इससे स्थानीय जमींदारों में असंतोष और गुस्सा पैदा हो गया और वीर गोकुला जाट की कमान में मुगलों के खिलाफ विद्रोह का रूप ले लिया। विद्रोह को दबाने के लिए औरंगजेब ने अपने सक्षम कमांडरों हुसन अली खान और ब्रह्मदेव सिसौदिया को राजपूत और मुगल सैनिकों की एक बड़ी सेना के साथ अब्दुल नबी की कमान में सादाबाद छावनी में भेजा। किसानों के इस विद्रोह का नेतृत्व तिलपत जमीदार माहू सिंह जाट का पुत्र जाट सरदार गोकुला जाट कर रहा था। इस विद्रोह का पहला टकराव तिलपत पर कब्जा और किसानों के जवाबी हमलों के साथ 4 दिनों तक युद्ध जारी रहा।

वीर गोकुला जाट ने औंरगजेब की किसानों व हिन्दुओं के प्रति दमन नितियों का विरोध करते हुये अपने साथियों के साथ बौंरगजेब के छक्के छुड़ा दियें थे। जाट वीरो व जाट विरांगनाओ के दुनिया भर के जाट इतिहास में ऐसा आदर्श जाट वीर हमे देखने को नही मिला जबकि एक जाट वीर निस्वार्थ भाव से आत्म बलिदान दे देता है जाट वीर गोकुला के पूर्वज सदियों से महावन बलदेव क्षेत्र के जागीरदार राजा रहे हैं इनके पूर्वज जाट सम्राट महाराजा कुलिचंद जाट वीर ने महमूद गजनवी से युद्ध लड़ा था दिल्ली के शासक अलमगीर औरंगजेब ने जब आम जनता पर अत्याचार शुरू कर दिए तब उनके खिलाफ उठने वाली पहली तलवार भी जाट वीरो की ही रही है हगावई क्षेत्र में तिलपत तिल्हू आज कल फरीदाबाद के गांव के जाट वीर जागीरदार गोकुला सिंह जाट ने औरंगजेब की धर्म परिवर्तन नीति के विरोध में सशस्त्र विद्रोह कर दिया जब कोई भी मुगल सेनापति गोकुला सिंह जाट वीर को परास्त नहीं कर सका तो अंत में औरंगजेब ने स्वयं एक विशाल सेना लेकर जन आक्रोश का दमन करने लिए निकलना पडा।

आज भारतवर्ष के मन्दिर और भारतीय जाट संस्कृति की रक्षा का तथा तात्कालिक शोषण अत्याचार और राजकीय मनमानी की दिशा मोड़ने का यदि किसी को श्रेय है तो वह केवल गोकुला जाट वीर को है लेखक चौधरी कृष्ण सिंह गॉहल्याण को जाट वीर गोकुला सिंह जी की जानकारी मनूची नामक यूरोपीय यात्री के वृतान्तों से होती है पांच माह तक भयंकर युद्ध होते रहे मुगलों की सभी तैयारियां और चुने हुए मुगल सेनापति जाट वीरों के आगे प्रभावहीन और असफल सिद्ध हुए क्या मुगल सैनिक और क्या मुगल सेनापति सभी के ऊपर गोकुला सिंह जाट वीर की वीरता और युद्ध संचालन का आतंक बैठ गया अंत में सितंबर मास में मुगल सेना बिल्कुल निराश होकर सेनापति शिकन खां ने गोकुला सिंह जाट वीर के पास संधि प्रस्ताव भेजा राष्ट्र धर्म और जाट संगठन की रक्षा के लिए औरंगजेब को जाट वीरों ने झुका दिया जाट वीर गोकुला सिंह ने निस्वार्थ भाव से औरंगजेब द्वारा पेश की गई मथुरा की गद्दी को भी ठुकरा दिया यूरोपीय यात्री मनूची के वृत्तांत के अनुसार औरंगजेब को जिसका साम्राज्य सिर्फ मुगलों में ही नही बल्कि उस समय तक सभी मुगल शासकों में सबसे बड़ा था यह थी जाट वीरवर गोकुला सिंह की महानता, दिल्ली से चलकर औरंगजेब 28 नवंबर 1669 को मथुरा जा पहुंचा औरंगजेब ने अपनी छावनी मथुरा में बनाई और वहां से सम्पूर्ण युद्ध संचालन करने लगा गोकुला सिंह जाट वीर को चारों ओर से घेरा जा रहा था।

दूसरे दिन फिर घमासान युद्ध छिड़ गया जाट वीर अलौकिक वीरता के साथ युद्ध करते रहे मुगल सेना तोपखाने और जिरहबख्तर से सुसज्जित घुड़सवार सेनाओं के होते हूए भी गोकुला सिंह जाट वीर पर विजय प्राप्त ना कर सकी भारतवर्ष के जाट इतिहास में ऐसे युद्ध कम हुए हैं जहां कई प्रकार से बाधित और कमजोर पक्ष इतने शांत निश्चय और अडिग धैर्य के साथ लड़ा हो हल्दी घाटी के युद्ध का निर्णय भी कुछ ही घंटों में हो गया था पानीपत के तीनों युद्ध एक कुछ दिन में ही समाप्त हो गए थे परन्तु जाट वीरवर गोकुला सिंह का युद्ध तीसरे दिन भी चला तीसरे दिन फिर जाट वीरों ने भयंकर संग्राम किया इसके बारे में एक इतिहासकार का कहना है कि जाट वीरो का आक्रमण इतना प्रबल था कि मुगल सेना के पैर उखड़ गए, परन्तु तभी हसन अली खां ने जाट वीरो के बीच में कई गद्दार ढुंढ निकाले गद्दारों को लालच देकर हसन खां ने गद्दारों के नेतृत्व में एक नई ताजादम मुगल सेना बना दी इस मुगल सेना में जाट वीरो के ही गद्दारों ने गोकुला सिंह जाट वीर की विजय को पराजय में बदल दिया शासक आलमगीर की इज्जत बच गई। जाट वीरों के पैर तो उखड़ गए, फिर भी जाट वीर युद क्षेत्र से नहीं भागे जाट वीरों का गंतव्य बनी तिलपत आज का फरीदाबाद की गढ़ी जो युद्ध क्षेत्र से बीस मील दूर थी तीसरे दिन से यहां भी भीषण युद्ध छिड़ गया और तीन दिन तक चलता रहा भारी तोपों के बीच जाट वीरो की गढ़ी भी इसके आगे टिक नहीं सकी और गद्दारों के कारण इन जाट वीरो का पतन हो गया तिलपत गांव के जाट वीरों के पतन के बाद गोकुला सिंह जाट वीर और इनके ताऊ उदयसिंह जाट वीर को सपरिवार बंदी बना लिया गया इनके सात हजार जाट वीर भी बंदी बना लिए गए। इन सब जाट वीरो को आगरा लाया गया औरंगजेब पहले ही आ चुका था और आगरा के लाल किले के दीवाने आम में आश्वस्त होकर विराजमान हो गया सभी जाट वीर बंदियों को औरंगजेब ने कहा हे जाट वीरो जान की खैर चाहते हो तो मुगलों का धर्म कबूल कर लो रसूल के बताएं रास्ते पर चलो बोलो क्या कहते हो मुगलो का धर्म या मौत अधिसंख्य जाट वीरों ने कहा राजन अगर तेरे खुदा और रसूल का रास्ता वही है जिस पर तू चल रहा है तो हमें तेरे रास्ते पर नहीं चलना है हमें मौत मंजूर है अगले दिन गोकुला सिंह जाट वीर और उदयसिंह जाट वीर को आगरा कोतवाली पर लाया गया उसी तरह बंधे हाथ गले से पैर तक लोहे में जकड़ा शरीर गोकुला सिंह जाट वीर की सुडौल भुजा पर जल्लाद का पहला कुल्हाड़ा चला तो हजारों का जनसमूह हाहाकार कर उठा कुल्हाड़ी से छिटकी हुई गोकुला सिंह जाट वीर की दाई भुजा चबूतरे पर गिरकर फड़कने लगी परन्तु गोकुला सिंह जाट वीर का मुख ही नहीं शरीर भी निष्कंप रहा उसने एक निगाह फुव्वारा बन गए कंधे पर डाली और फिर जल्लादों को देखने लगा कि दूसरा वार करें परन्तु जल्लाद जल्दी में नहीं थे। उन्हें ऐसे ही निर्देश दिए गए थे दूसरे कुल्हाड़े पर हजारों मुगल भी आर्तनाद कर उठे अनेकों ने आंखें बंद कर ली अनेक रोते हुए भाग निकले कोतवाली के चारों ओर मानो प्रलय हो रही थी एक को दूसरे का होश नहीं था वातावरण में एक ही ध्वनि थी इधर आगरा में गोकुला सिंह जाट वीर का सिर गिरा उधर मथुरा में केशवरायजी का मन्दिर गिरा हिन्दुओं की रक्षा में व स्वतंत्रता के लिए वीर गोकुला जाट ने अपना बलिदान दे दिया, जिसके लिए हम सभी हृदय से सत्–सत्–सत नमनः करते हैं।

जयदीन बंधु छोटूराम, जय भाईचारा

(बसंत पंचमी विशेष)

– सूरजभान दहिया

रह–रहकर एक बात इन विषम वेदना के क्षणों में उठ रही है कि क्यों किसान–ग्रामीण न जाने कब से सत्ता की नीतियों के कारण शोषित होता आ रहा है। सदियों में कोई न कोई इनकी नरक की जिंदगी को खुशहाल बनाने के लिए इस धरा पर अवतरित तो हुआ और उस शख्सियत ने ग्रामीण स्वराज लाया भी, परंतु केवल अपने अल्पकाल में, जैसे चौधरी छोटूराम ने पंजाब में 1937 से 1945 तक अपनी जमीदारा पार्टी के शासनकाल में किसान राज स्थापित किया– किसानों की सरकार किसानों द्वारा चुनी हुई और इसे चलाने वाले भी किसान। परंतु ये किसान मसीहा सिर्फ 62 वर्ष की आयु में चल बसे और वहां किसान राज का अंत हो गया। गांव के धूल–धूसरित ग्रामीणें के साथ इसके बाद जो घटी और घट रही है, वह दर्दनाक दास्तां लंबी ही लंबी होती जा रही है– कारण सिर्फ एक और केवल एक। देश की वर्तमान नीति यह परिभाषित कर दी है कि ''किसान का शोषण करो और कारपोरेट सेठ बन बैठो।''

चौधरी छोटूराम तो वापस नही आते, अलबत्ता उनके साथ जुड़ी खट्टी–मीठी, तिक्त–कसैली कड़वी जैसी भी हो (भिन्न–भिन्न लोगों की नजरों में) यादें जरूरत आती हैं। लेकिन किसानों के साथ जुड़ी उनकी दीर्घकालीन आत्मीयता

और उस आत्मीयता से रची–पुती मधुर स्मृतियां रह–रहकर दिलो–दिमाग में उत्तेजना उत्पन्न करती रहेगी। जब तक उनके द्वारा किये जनहित के कार्यों की चर्चा हुआ करेगी, जैसे अब हो रही है, तब तक लगा करेगा कि किसान–मसीहा छोटूराम हमारे आसपास यही कहीं खड़े हुए हैं, हमारे दुःख सुख की बातें सुन रहे हैं।

जब चौ. छोटूराम किसानों के बीच होते थे तो वे किसानों के अनुयायी बन जाते थे और जब वे उनसे दूर होते थे तो किसान उनके अनुयायी होते थे– 'यथा राजा तथा प्रजा' व यथा प्रजा तथा राजा का पहिया घूमता रहता था। छोटूनामे पर बहुत कुछ लिखा गया है, परंतु अपूर्ण है, इस पर बहुत कुछ बोला भी गया है और बोला जा रहा है, परंतु अधूरा है। काफी अनसुनी स्टोरी लिखनी और सुननी बाकी है, मेरा प्रयास है, उतावलापन है, उत्सुकता है, इस विशालकाय स्टोरी को लिखकर व सुनाकर विराम दूं– पर यह होने वाला नहीं है। चलो, वाड्मय छोटूनामे की एक कड़ी को यहां ले लें।

चौ. छोटूराम आठवीं क्लास में झज्जर पढ़ते थे, वे महीने में अपने घर आते–जाते थे– पैदल बीस कोस। दिवाली की छुट्टियों में वे घर आये। घर की सालमे बाजरे का एक दाना भी दिखाई नहीं दिया। 12–13 बीघे की सामणी फसल थी– चार महीने बाजरा ही खाया जाता था। छोटू बोला– बाबू। बाजरा कित गया? बाणिया ले गया, ''बेटा'', बाबू ने कहा। 'कितना था' छोटू ने पूछा, 'योतो ना बेरा' बाबू ने बताया 'के भाब ले गया बाणिया?' 'भाव न कैरया' बाबू कहण लाग्या।

छोटू बोल्या– ''बाबू! बाजरा भी लेग्या बाणिया, तोल भी उसका, भाव भी उसका, तेरा के? खूड सै वो गहणे। सिर्फ कमर तेरी सै– ढोए जा बाजरा बाणिये के नोहरे तक। कूबड़ा हो गया।'' ''न्यू ए चालता आया सै बेटे'' बाबू सुखीरा मने दबी व दुखी जुबान तै कहा। छोटू बोल्या– ''समझूं सूं बाबू। जमीदार तै दलदिया इस राज काज ने– कर्जे का कोढ़ लाग्रह्या सै, जमीदार का तै इसतै मरकै पान्डा छूटै सै। वक्त आण दे, बाबू वक्त। मै इसमें आपणी जिंदगी झोखूंगा– राम भली करेगा। बाणिया की बही मे तै पन्ने भी ना बच रहे– एक ही पन्ने पै सैकड़ों जमीदांरा के गूठ्ठे ने यमराज को न्यौता दे रखा है।''

चौ. छोटूराम ने तो फिर ठाणली– 'दो काम तै करणेए सै– एक नै, किसानों की कर्जा–मुक्ति और दूसरी गिरवी पड़ी जमीन किसानों को वापिस। गढी तै यू सोचता–सोचता झज्जर आग्या–छोटूराम ने इस मिशन का रास्ता तो मिला नही, पर आत्मविश्वास उसमें जरूर जगा– ''कुछ भी मुश्किल नहीं अगर ठाण लीजिये।'' यहां मुद्दे पर ही रहना वाजिब है। 1923 में यूनियनिस्ट पार्टी, अपने सहयोगी फैजले हुसैन के साथ गठित करके 'ना जमीदार पर कर्जा, ना खेत रहे गिरवी' मिशन की उद्घोषणा हुई। पंजाब की राजनीति में चौ. छोटूराम ने इससे भूचाल लादिया। फिर 1935 के इंडिया एक्ट के तहत 1937 में पंजाब असेंबली के चुनाव हुये– चौ. छोटूराम की पार्टी जीती– उनकी सरकार बनी। बस तुरंत मिशन पूरा हुआ– 1938 में भिन्न–भिन्न किये गए कानून पास द्वारा किसानों को कर्जा मुक्ति मिली व गिरवी पड़ी भूमि किसानों को वापिस मिली–यूनियनिस्ट पार्टी, जमीदारा पार्टी के रूप में लोकप्रिय हुई। चौ. छोटूराम ने जो आठवी के छात्र के रू्प में प्रण लिया था– पूरा हुआ, कृतज्ञ जमीदारों ने उन्हें रहबरे–आजम के खिताब से नवाजा। यह होती है लोकतंत्र की असली जनशक्ति जो चौ. छोटूराम ने बेजाह इस्तेमाल किया अर्जित की थी। उसका तीन जाट विभूतियां जो किसानों की मसीहा के रूप में जनमास के दिलों में समाई हैं– चौ. छोटूराम से जितना किसानों ने चाहा वह पूरा हुआ। चौ. चरणसिंह भी आजादी के बाद छोटूराम मिशन को आगे बढ़ने में सक्रिय रहे, प्रधानमंत्री भी बने–दूसरे जाट तेवजिया रहनुमा बल्लभगढ़ नरेश नाहर सिंह के बाद जिन्होंने लालकिले के प्राचीर से अवाम को संबोधित किया, परंतु अपने लक्ष्यों की पूर्ति न कर पाये। किसानों ने चौ. देवीलाल को भी उसी शिखर पर लाकर उम्मीदें बांधी– ''ताऊ पूरा तोलेगे, लालकिले तै बोलेगे'' परंतु ऐसा हो नही पाया। बाकि अब बचा क्या– एक बहुत बड़ा अप्रभावी किसान नेताओं का जमावड़ा– आज के किसानों के हतों के संदर्भ में बिल्कुल अप्रासगिंक। फिर भी उम्मीद तो है ही लालकिले पर कोई तीसरा तेवितिया बोलेगा या कोई अन्य जाटगोत्री?

स्वामी विवेकानन्द ने जनकल्याण कार्य हेतु कहा था– ''मुझे कोई खरा व्यक्ति दे दो क्योंकि मैं इन हजारों–लाखों अस्थिरगति वाली भीड़ के झुण्डों को लेकर क्या करूंगा जोकेवल हकूमत करना चाहते हैं, लेकिन जन सेवा करने के लिए कोई भी तैयार नहीं है, बल्कि एक–दिन में दस–दस बार गिरगिट की तरह रंग बदलते हैं।'' इस संदर्भ वह खरा व्यक्ति कौन हो सकता है, कैसा हो सकता है? ऐसा खरा व्यक्ति है– दीनबंधु चौ. छोटूराम अर्थात वे सभी नैतिक, विवेकापूर्ण एवं समर्पित लोग जो जीवन में पूर्णता को अर्जित किये हुये हैं। ऐसे ही महापुरूषों का अभाव आज विषाद का कारण है। दिव्य शक्ति वह जो लोकगीतों में समा जाये,– ''मंदिर में पूजा होती श्याम की, खेत खलिहान में पूजा होती छोटूराम की''।

किसान फिर भी धार की मार सह रहा है– बढ़ता सिर पर कर्जा और उसकी जमीन पर लूटेरों की घात। यह सब कुछ सोची समझी सत्ता नीति के निर्देश से हो रहा है। यदि इस विषम स्थिति से किसान ने निपटना है, तो उसे दो बातों में ध्यान ही नहीं देना होगा, बल्कि अपने अस्तित्व के लिये इन्हें खड़ग के रूप में

इस्तेमाल करना होगा– भाईचारा व शिक्षा इन दोनों को जकड़ना होगा, इन पर न कोई कुताई बरतनी होगी और न ही कोई समझौता। चौ. छोटूराम ने अपनी बेहतरी के लिये अपनी जिंदगी दी, और आप उन द्वारा दी गई खुशहाली को कहां गंवा रहे हो? किसान युवा दिशा भ्रमित है, किसान बहुत सुस्ती मार रहा है, मेहनत करना छोड़ चुका है, घर में मेहनत का कोई माहौल ही नहीं है, किसान के घर से क्वालिटी शिक्षा पाना गायब हैं। गांव में इतनी ईर्ष्या है कि भाईचारा पूरी तरह से गायब है। तो मैकाले ने जो जाटलैंड के लिये 1857 के स्वतंत्रता आंदोलन के पश्चात नीति निर्धारण करके भविष्यवाणी की थी, वह सच होती दिख रही है– "आने वाली जाट कौम की नस्ले शहरों की नुक्कड़ में चाय की दुकानों पर पेट भरने के लिए कप धोती मिलेगी।"

जाटलैंड के किसानों का माइंडसेट सदा से यही रहा है कि वे समय से पहले कभी नहीं सोचते और न किसी की सुनते। चौ. छोटूराम जीवन पर्यन्त भाईचारा में सुदृढ़ता और 21वीं सदी के कारगर हथियार– 'शिक्षा' को पाने हेतु किसानों को समझाते रहे, पर ढाक के वही तीन पात। यदि आप अंतःकरण से चौ. छोटूराम को सम्मान देते हैं तो उन्हें अपना यह मिशन समर्पित करें– " भाईचारा बढ़ाओ, शिक्षा फैलाओ"। बस इसी मिशन से आपकी अगली पीढ़ी का जीवन सुरक्षित है। प्रण लो– जय राम जी की जगह 'जय भाईचारा' से सामने वाले का स्वागत करो। हमारे सिख भाई– 'सत श्री अकाल' की भावना को लेकर विश्व में ख्याति पा चुके हैं। यहूदियों को जब हिटलर ने देश से निकाला तो वे शिक्षा के कारण अमेरिका में आज बड़ी–बड़ी कंपनियों के मालिक हैं। आप भी सरस्वती के आर्शीवाद से यही कारनामा करके दिखायें– निःसंदेह आप मेहनती हैं, सक्षम भी हैं, परंतु इच्छाशक्ति की जरूर कमी है– इस कमी को तिलांजलि दें। बस इसी आशा के साथ...

नये इतिहास का निर्माण कैसे होगा!

– डॉ० धर्मचन्द्र विद्यालंकार

"इतिहास नहीं होता उनका जो जग के महामहीप बने, यह तो उनका ही होता है जो तो झंझा के ही दीप बने।
संघर्ष का तेल किया, प्राणों लोगों की सजाई थी बाती, जो तिल–तिल जला प्रभज्जन में, इतिहास उसी की है थाती।"

(नाहर सिंह कीर्ति–कथा)

उपर्युक्त पक्तियाँ हमने अपने द्वारा विरचित खंडकाव्य से ही उद्धश्त की हैं। जिसमें स्पष्टतया ही इतिहास के निर्माता वीर–बलिदानियों को ही बताया गया है। एक बार सरदार भगतसिंह ने अपनी 'भारत–नौजवान सभा' की बैठक को सम्बोधित करते हुए यही कहा या कि आज हमें कोई भी नहीं जानता है। वर्तमान में लोग केवल ठाकुरदास भार्गव और तेजबहादुर सप्रू को ही जानते हैं क्योंकि उनके पास बड़ी–बड़ी कोठियाँ है और अंग्रेज सरकार द्वारा दत्त बड़ी–बड़ी मानद उपाधियाँ भी हैं, परन्तु आने वाली पीढियाँ उनको पूज जाएगी। वे केवल हमें ही याद करेंगें, क्योंकि हम उनके सुनहरे कल के लिए ही अपना आज चलिदान कर रहे हैं।

अतः एव सदैव इतिहास के निर्मात्ता दोनों ही प्रकार के लोग होते हैं, एक वे जिन्होंने अन्याय और अनीति का अनवरत अप्रतिहत प्रबल प्रतिरोध ही किया हो या फिर वे शासक जिन्होंने बजाय विध्वंस के नूतन निर्माण का ही महान् कार्य किया हो। आज अकबर और शाहजहाँ हमारे सम्मुख ऐसे ही महान् निर्मात्ता शासकों के रूप में स्मरण किए जाते हैं। सम्राट अकबर ने यदि सभी वर्गों के सहयोग से ही सुशासन संचालित हमारी राष्ट्रीय एकता को ही सुदृढ किया था तो शाहजहाँ ने प्रेम के पावनतम प्रतीक ताजमहल का निर्माण कराकर काल के कपाल पर ही कला का कलित पदचिन्ह ताजमहल छोड़ा है। इस विषय में हमें विदेशों से आक्रान्ता बनकर आये हुए लुटेरों गौरी और गजनवी से अलगाना ही होगा। क्योंकि लुटेरे लोग तो तूफान बनकर आये थे और आँधी बनकर ही गुजर गये थे। परन्तु जिन शासकों ने यही रच–बसकर सुशासन किया है और जनकल्याण का भी कार्य किया है भला हम उन्हें विदेशी और विधर्मी कैसे कह सकते हैं।

और तो क्या, हम तो बाबर को आव्रजक तो मानते हैं परन्तु लुटेरा नहीं क्योंकि उसने कोई किसी प्रकार की तोडफोड और लूटपाट यहाँ पर नहीं की थी। और तो क्या, जिस रामजन्मभूमि के मन्दिर का ध्वंसकर्त्ता उसको बताया गया था, उसको भी पुरातात्विक उत्खनन ने असत्य ही सिद्ध कर दिया है क्योंकि बाबरी मस्जिद के नीचे जिस भी संरचना के ध्वंसावशेष मिले थे, वे ग्यारहवीं शताब्दी के ही थे। जबकि बाबर का आगमन भारत–वसुन्धरा पर सोलहवीं शताब्दी (1526ई०) में ही हुआ था। अतएव इतने सुदीर्घ समयान्तराल में तो कोई भी भव्य भवन भी स्वतः ही जराजीर्ण होकर गिर सकता है। इसलिए उसके ऊपर धर्म–ध्वंसन का आरोप अनंगल हो है।

यदि मुगलकाल से भी पूर्ववर्ती तुगलक सल्तनत की भी हम चर्चा करें तो दो–दो नहरें पूर्वी यमुना–नहर और इसी प्रकार से पश्चिमी यमुना नहर का निर्माण उस शासक ने कराया था। जिनसे कि हरयाणा और पश्चिमी यमुना नहर का निर्माण उस शासक ने कराया था। जिनसे कि हरयाणा और पश्चिमी उत्तर प्रदेश की लाखों हैक्टेयर कृषि भूमि सीचित आज

पर्यन्त भी हो रही है। और तो क्या, अलाउद्दीन खिलजी जैसे अपेक्षाकृत कुख्यात शासक ने भी भारत में मंडी व्यवस्था का विधिवत् रूपेण सूत्रपात किया था और बाटों का मानकीकरण और जिन्सों के दाम सुनिश्चित करे, उसी ने मध्यकाल में बाजार–व्यवस्था का व्यापक विकास किया था।

बादशाह अकबर ने तो अपना सेनापति तक एक हिन्दू शासक राजा मानसिंह को ही बनाया था, जबकि राजतांत्रिक व्यवस्था में राजशक्ति का मूलाधिष्ठान भी सेना ही थी। इसी प्रकार से अपना प्रमुख परामर्शदाता किंवा प्रधानमंत्री भी उसी ने महेशदास अथवा उपाख्य बीरबल को ही नियुक्त किया था। काबुल को सम्राट् समुद्रगुप्त के पश्चात बारह सौ वर्षों बाद विजित करके उसी ने भारत–राष्ट्र में मिलाया था, तब भी उसका सूबेदार या राज्यपाल बजाय किसी मुस्लिम राजपुरुष के एक हिन्दू सामन्त को ही वह स्वर्णिम अवसर उपलब्ध कराया था। और तो क्या, उसी के सर्वाधिक विवादित उत्तराधिकारी औरंगजेब ने उसी की पावन परम्परा का प्रतिपालन करते हुए ही जब पुनः अफगान देश को उसने विजित किया था तो उसने भी जोधपुर के राठौर शासक जसवन्त सिंह को ही सूबेदार बनाया था और मिर्जा राणा जयसिंह तो शाही सेनापित था ही।

जब 1757 ईस्वी में ब्रिट्रिश ईस्ट इंडिया कम्पनी ने बंगाल को जीत लिया था और उधर पश्चिमोत्तरी सीमान्तों पर अहमदशाह अब्दाली बारम्बार दस्तक देने लगा था, तभी भरतपुर नरेश महाराजा सूरजमल ने उसी समय पुष्कर–स्नान के पावन पर्व पर एक राजसभा की बैठक आहूत की थी। जिसमें उत्तर–भारत की मुगल व मराठा एवं राजपुत्र तथा जाट सारी ही शक्तियों के शासक सम्मिलित हुए थे। उसमें उन्होंने यही प्रस्ताव प्रस्तुत किया था कि भारत के दोनों ओरों से अनवरत और अबाध अप्रतिहत आक्रमण विदेशी शक्तियों के होने लगे हैंय ऐसे में हम दिल्ली के मुगल बादशाह को अपना केन्द्रीय प्रतिनिधि मानकर स्वयं उसी शासन के यदि मन्त्रीगण स्वयं को मानकर उसके शक्ति स्तम्भ ही सिद्ध क्यों न हों। और यदि हममें से किसी के भी ऊपर कोई भी वैदेशिक शक्ति का आक्रमण होगा, तो हम सभी सामन्तगण उसका समवेत् स्वरूप से साम्मुख्य करेंगें।

तभी राजपुत्रों ने उस अवसर पर यही आपत्ति अपनी दर्ज कराई थी कि हमें मुगलों से किसी प्रकार के किसी उत्पीडन की आशंका नहीं है, बल्कि उन्हें उन मराठी लुटेरों से ही अधिक आपत्ति की अनवरत आशंका थी जोकि आये दिन उत्तर भारत में लूट मचाकर खिंडनी नामक कर की ही उगाई अबाध रूपेण किया करते थे। बल्कि जयपुर के राजा ईश्वरसिंह तो उन्हीं के आतंक से उत्पीडित होकर हीरे की कणी खाकर अपना प्राणान्त तक भी कर चुके थे। हिन्दू राष्ट्र का नित्य निनाद करने वाले ऐसे इतिहासकारों को यह घटनाक्रम अवश्यमेव ज्ञात रखना चाहिए।

जब मराठा भाऊ सदाशिव राव दिल्ली की ओर अब्दाली का सबलतापूर्वक सामना करने को चला था, तब ब्रजराज सूरजमल ने मराठों को यही सत्परामर्श दिया था कि आप इस युद्ध को बजाय धार्मिक के राष्ट्रीय आधार पर ही लड़ें इससे यह होगा कि सारे ही मुस्लिम शासकों को भी देशी शक्तियों के ही साथ संघर्ष करना होगा, अतएव वह युद्ध देशी और विदेशी के आधार पर ही लड़ा जाता। परन्तु उस धर्मान्ध और जात्याभिमानी मराठा सरदार ने सूरजमल जैसे जमीनी योद्धा का सत्परामर्श न मानकर धार्मिक आधार पर ही पानीपत का तीसरा युद्ध लड़ा था और पराजय का भी मुख देखा था। धर्मराष्ट्रवाद और उस पर आधारित इतिहास वहीं तो अंधी सुरंग है।

आजकल ऐसे ही धर्मध्वजी लोग भारतवर्ष के राजसिंहासन पर विराजमान है जोकि राष्ट्रीयता को कंवल मत–पन्थ के ही एकमात्र आधार पर व्याख्यापित करते हैं। अतएव उनके लेखे भारतीय इतिहास का भी अर्थ केवल हिन्दू इतिहास से ही है। इसीलिए ऐसे अतीतान्ध घोघों–बसन्त मुस्लिम काल के मध्यकालीन स्वर्णिम पश्ष्ठों को भी भारत के इतिहास में से ओझल ही कर देना चाहते है। मानिये यदि वे आज अकबर महान् को इतिहास की पुस्तकों में से निकलवाते हैं तो क्या उसी के साथ राजा टोडरमल जैसा कुशल वित्तमन्त्री भी स्वतः ही पश्ष्ठभूमि में नहीं चला जाएगा।

इसी प्रकार से बादशाह अकबर और बीरबल का साथ तो जनजन का ही कंठहार बना हुआ है, तब बीरबल की बुद्धिमानी का फिर क्या होगा। तो राजा जयसिंह की वीरता और फिर उसकी स्वामीभक्ति वाले सामन्ती जीवन–मूल्यों का भी क्या होगा। यही नहीं, जो अटूट और असीम विश्वास एक विधर्मी सम्राट ने अपने एक हिन्दू सेनापति पर प्रकट किया था, हमारी उस उज्जवलतम सैन्य–परम्परा का फिर क्या अर्थ शेष रहूंगा। फिर साथ में सन्तकवि हरिदास और तानसेन के सरगम संगीत की भी स्वर लहरियाँ भी तब तो अनुसनी ही रह जाएंगी।

इसी क्रम में बादशाह जहांगीर की न्याय निष्ठा का भी फिर क्या महान मूल्य बचेगा, जिसने विक्रमादित्य के ही समान न्यायपीठ पर बैठकर निर्दोष निरीह बालक हकीकत राय को मश्त्युदण्ड देने वाले काजियों और मुक्तियों या मुख्तारों (वकीलों) को भी आगरा में 'सैरे–दरिया' के ही ब्याज से मश्त्युदण्ड़ दिया था। फिर जिस हिन्दुस्तानी संगीत का जन्म जो मुगल बादशाहों और नवाबों के घरानों में हुआ है, उसका क्या होगा। आखिर उसी से तो हमारी साँझी संस्कृति का शिलान्यास हुआ था। अमीर खुसरो ने ही तो एक बार भारतीयता की भव्य भावना से भरकर यह कहा था– 'मेरा जन्म बेशक एक तुर्क कुल में हुआ है, फिर भी मेरा तानपुरा सदैव भारत के ही तो गीत गुनगुनाता रहता है।'

जिस सांझे संगीत सरगम और चित्रकला तथा स्थापत्य–शिल्प का जो विपुल विकास मुगलकाल में हुआ है, वह तो अद्वितीय अनुपम और अद्‌भुत् ही है। मुगल और राजपूत चित्रशैलियों को मिलाकर जिस हिन्दोस्तानी मूर्तिशिल्प का मनोहारी स्वरूप स्थापित हुआ था, वह सर्वांग सुन्दर ही था। राजस्थान के किशनगढ़, रूपमगढ और मारवाड से लेकर मेवाड तक की चित्रकला और मूर्तिकला भी उसी मध्यकालीन साँझी संस्कृक्ति की ही तो अमूल्य धरोहर है। उसी से तो पर्वतीय चित्रशैली, कांगड़ा और कुल्लू, तथा बश्नेर और गुलेर की कलात्मक चित्रशैलियों का जन्म हुआ था। और तो क्या, वस्त्रों पर उत्कीर्ण फडशैली या मधुबनी की पेंटिग्स भी तो उसी साँझी सांस्कृत्तिक विरासत की ही थाती है।

विशेषकर जो मेहराबदार अथवा अर्द्धचन्द्राकार स्थापत्य कला का शिल्प है, वह इस्लामी परम्परा का ही तो पावन प्रदेय है। गोल गुम्बद और ऊँची–ऊँची बुलन्द मीनारें भी तो भारतवर्ष में पश्चिम और मध्येशिया से ही तो चलकर आई थी। परन्तु उस सारी कलात्मकता का सौंदर्य वर्तमान काल में साम्प्रदायिकता के शैवाल से सड़ रही हैं। मानो जैसेकि धर्म की धुंध ने हमारे मानस–पटल को ही तमास्तोम से आज आपूर्ण कर दिया है। आजकल हम केवल धमांन्ध दृष्टि से ही अपने अतीत का अवमूल्यन करने लगे हैं। क्या ताजमहल और बुलन्द दरवाजा जैसी स्थापत्य की सुन्दर और कलात्मक कृतियाँ किसी प्रकार की धर्मदृष्टि की दया की पात्र हैं। आखिर शान्ति और स्मृद्धि के समय में ही तो कला और संस्कृति का व्यापक विकास संभव था। यदि आजकल जैसा विषाक्त वातावरण मध्यकाल में भी रहा होता तो क्या एकाध भी ऐसी सुन्दर संरचना स्थापित हो पाती।

हमने प्रथम स्वतंत्रता संग्राम भी तो मिलकर ही लड़ा था। हिन्दू और मुस्लिम दोनों ने ही एक तीसरी विदेशी साम्राज्यवादी शक्ति से अपनी स्वतंत्रता–प्राप्ति हेतु हमने सुदीर्घ संघर्ष किया था। बादशाह जफर को ही सारे ही हिन्दू सामन्तों ने भी अपना राष्ट्रीय नायक आखिर क्यों स्वीकार किया था। नाना धाँधॉपन्त और मास्टर अजीमुल्लाखान ने मिलकर ही तो माला के सारे मोतियों को एक सूत्र में पिरोया था।

रानी झाँसी लक्ष्मीबाई से लेकर तात्या टोपे से कुंवर सिंह से लेकर बल्लबगढ़ नरेश नाहर सिंह से नवाब झज्जर अब्दुल रहमान खान और नवाव भट्टूकलां अब्दुल समद से लेकर राव तुलाराम और रामगोपाल सिंह सभी ने तो तय कन्धे से कन्धा मिलाकर स्वतंत्रता का सतत संघर्ष किया था। इसी प्रकार से स्वाधीनता संघर्ष में भी महात्मा गाँधी और पं० जवाहरलाल नेहरू के साथ मोहम्मद अब्दल कलाम आजाद भी तो साथ खड़े थे। हकीम अफजल खां अन्सारी से लेकर रफी अहमद किदवई से लेकर सरदार पटेल और नेता जी सुभाषचन्द्र बोस तक स्वतंत्रता सेनानियों की एक सुदीर्घ श्रश्ंखला रही है। तब उनमें किसी भी प्रकार के मत–मजहब का भेदभाव कहाँ था।

बल्कि जिन लोगों का अपना कोई उज्जवल अतीत नहीं रहा है, वही वर्तमान में इतिहास की शव– साधना अघोरी और कुटिल कापालिक बनकर आज करना चाहते हैं। जो लोग स्वयं तीन और तेरह या नरम और गरम किसी भी आजादी के संघर्ष दल में नहीं थे, और क्षमा–याचनाएँ करके सुख–सुविधा सम्पन्न सहज जीवन यापन कर रहे थेय वहीं बौने वामन लोग वर्तमान काल में पंजों के बल पर खड़े होकर उस वोरता और शौर्य के समुत्तुंग श्रृंगों का ही स्पर्श करना क्यों चाहते हैं। वही संघर्षभीरू लोग आज यह विवाद उठाकर उस संघर्षशील पावन परम्परा का समाधि–लेख लिखना क्यों चाहते हैं। और सवाल उठाते हैं कि यह इतिहास उनका अपना नहीं है अपितु यह तो विदेशियों और विधर्मियों द्वारा हो तो निर्मित और लिखित है।

क्या हम आज अपने राष्ट्रीय इतिहास के उस उज्जवल कालखण्ड का विस्मरण कर सकते हैं, जिसमें कि भारतवर्ष विश्व की अर्थव्यवस्था में एक–चौथाई सकल सम्पदा का एकाको हो स्वामी था। वहीं तो हमारा स्वर्णकाल सत्य में था। जिस गुप्ताकल में नकद मुद्रा मोहिनी के अभाव में सामन्तों को भुक्तिदान करके हो तो उनको वेतन–भुगतान किया जा रहा थाः वह गुप्तकाल क्या हमारे लिए कदापि स्वर्णकाल सिद्ध हो सकता है। जिस काल में भारतीय वस्त्र–व्यापार विश्व–वसुधा का तन ढाँप रहा थाय वही तो हमारी सभ्यता का स्वर्णकाल कहा जा सकता है। परन्तु यदि उल्लू को दिन में नहीं दिखाई देता है तो क्या यह भी भुवन भास्कर देव दिवाकर का हो दोष है?

राष्ट्रों और इतिहासों का नवनिर्माण सदैव प्रेम पगी पगडंडियों पर प्रगति के पथ पर चलकर हो तो संभव हो सकता है। इंष्यों और द्वेष और घोर घ्रणा कदापि किसी राष्ट्र और इतिहास के मूलाधार नहीं हो सकते। यक्ष और गंधर्व कोल–किरात मंगोलों और तुर्कों से लेकर आर्यों और द्राविडों तक कितनी ही जातियों ने कालक्रम में मिलकर इस राष्ट्र का निर्माण किया है। शकों एवे कुषाणों तथा हुणों से लेकर यूनानियों तक ने भारत देश को बहुत कुछ दिया है। गर्ग संहिताकार का यह कृतज्ञता पूर्ण वाक्य भी तो पढकर देखिए–यद्यपि ये यवन और म्लेच्छ (मिस्त्रवासी) लोग विदेशी और विधर्मी हैं तथापि इन्होंने हो हम भारतवासियों को गणित और ज्योतिष तथा वैद्यक का विलक्षण ज्ञान दिया है। और तो क्या, अकेले चीन जैसे देश से हमने रेशमी वस्त्र बुनने की कला और चीनी मिट्टी के बर्तन, चाय ओर कागज तथा बारूद और ठप्पों की कलित कलाएँ उधार ली हैं।

और तो क्या, पश्चिन या यूरोप से चलकर आने वाली जातियों ने हमारे राष्ट्रनिर्माण में अपना–अपना अमूल्य अवदान किया है। यथा, अंग्रेज जाति से हो हमने आधुनिक शिक्षा–दीक्षा

और पाश्चात्य सभ्यता का प्रभूत परिचय प्राप्त किया है। उस्सों के संसर्ग से हमने उद्योगीकरण और जनतात्रिकीकरण भी तो सीखा है। नये–नये पथ–परिवहन के और संचार क्रान्ति के सुगम साधन भारत में वही गौरांग प्रभू हो तो लेकर आये थे। भले हो वे विदेशी और शोषक भी थे अपनो स्वाधीनता के लिए सतत संघर्ष भी किया था। वे तो, फिर भी यहाँ से बहुत सारा हमारा धन द्रव्य स्वदेश लौट गये थे परन्तु जिन मुगलों ने यहीं पर खाया और बनाया है उन्हें तब हम विदेशी और लुटेरे कैसे कह सकते हैं।

अतएव भारतीय राष्ट्रवाद कोई इकहरी सांस्कृत्तिक संरचना नहीं है। वह एक बहुलवादी विविधवर्णी संघात्मक संरचना हो है, जिसमें सभी का सक्रिय समायोग और सहकार सदा से हो रहा है। अतएव वर्तमान में भारत–राष्ट्र किसी एक हो जाति विशेष को हो सुन्दर संरचना कैसे सिद्ध हो सकती है। आखिर इतिहासों का निर्माण भी तो साँझे संघषों के बल पर ही किया जा सकता है। केवल साम्प्रदायिक वैर–वैमनस्य का बोज–वपन तो किसी भी राष्ट्र का विध्वंस और विखंड़न हो कर सकता है। वही वर्तमान काल में हमारी सता–व्यवस्था नव इतिहास लेखन के नाम से क्यों करने जा रही है। कोई बडी रूप–रेखा खींचकर ही दूसरी को लघु बनाया जा सकता है। संकीर्णता और साम्प्रदायिकता तो हमें बौना वामन ही बना सकती है।

Mani Bhawan, Sardar Patel and the Birla House

- R.N. Malik

Besides the uprising of 1857, the period of 42 years (1942-47) of freedom struggle constitutes the brightest part of Indian history in many ways. This is because, during this period, we could have a galaxy of angelic leaders who were personification of integrity, dedication, honesty, hard work and supreme sacrfces. Besides, there were thousands of young boys who kissed the gallows smilingly uttering Vande Matram or received bullets during various movements for the cause of freedom. There were also lacs of sole bread earners of poor families who went to jails at the call of the leaders. To cap it all, Mahatma Gandhi led the Freedom Movement of a new variety, called Satyagraha, that culminated into independence from the Empire on 15th Agust 1947.

Inspite of this glorious background, two things startle me the most. Firstly, after having a resurgent and vibrant democracy for few decades, our Parliament and State Assemblies have become arenas of petty wrangles between Opposition and ruling parties to the total exclusion of public issues and secondly, our new generations too have become oblivious and ignorant of founding father's of Indepent India.

The second realty dawned upon me last week when I travelled to Mumbai to visit two places of historic importance I.e. Mani Bhawan and Birla House. Mani Bhawan is a 3-storey building near Chaupati. Mahatma Gandhi used to stay at this building to conduct his Freedom Movements from 1917 to 1934. Thereafter, he shifted to Sewagram in district Wardha. The Bhawan has a museum and a library containing 50000 valuable books. Martin Luther King 2 and his wife visited India in 1959 and insisted to stay in the Bhawan to receive vibrations from the room occupied by Gandhi Ji though their stay had been arranged in a 5-star hotel in Mumbai. Later President Obama also visited the Bhawan during his visit to India in 1915. Presently, large number of visitors, mostly foreigners, visit the Bhawan daily. I had no difficulty in locating and visiting this building.

Locating Birla House where Sardar Patel breathed his last on 15.12.1950 was a very unpleasant experience. I enquired many people about the location of this building and nobody had any idea. Some young people plainly told that they knew nothing about Sardar Patel. I rang up an office of Aditya Birla to seek help to reach the place. The girl at the reception also expressed ignorance of Birla House where Sardar Patel breathed his last. She made no pretension to tell that she too did not know who Sardar Patel was. I had some inkling that the right building was at Malabar Hills and I could locate that building somehow. It is a mansion like building with a big gate and standing guards. I asked the guards if I had reached the right building. They expressed their ignorance. Then, I asked them if they knew who Sardar Patel was. Again the ans?r was clear NO. However, they connected me to somebody inside the building who told that that was the building I was looking for but the owner did not allow anybody to visit the building. My disgust and frustration new no bounds and I returned to my place thoroughly distraught.

I started ruminating why the great Sardar had become a forgotten hero. The answer is simple and plain. Firstly, the leadrs of the day, particularly

Jawaharlal Nehru made no effort to request G.D. Birla to convert the Birla House into a heritage building. G.D. Birla was alive at that time and he would have gladly agreed to that proposal. Even successive governments too made no effort to purchase the Birla House and convert it into a heritage building The Sardar Patel Samarak Bhawan at Delhi too has become virtually the JDU Bhawan because of the location of party office inside the Bhawan.

The present generation is ignorant of our Freedom fighters because CBSE books do not contain chapters on their lives and contributions and the Freedom Movement itself. I noticed this painful realty from the books of my own siblings. Finally, I ask myself and friends that if this is the fate of our freedom fighters then what for do we say," Shaheedon ki chitaon per lagenge her Varsh mele ...".

वैवाहिक विज्ञापन

- SM4 Jat Girl (DOB 11.09.95) 28/5'5" B.Sc. nursing from PGI Chandigarh and M.A. from Punjab University. Employed in PGI Chandigarh as Nursing Officer. Avoid Gotras: Kaliraman, Jani, Pawar. Cont.: 9416083928
- SM4 Jat Girl (DOB 11.02.98) 25/5'5" M.A. English from Punjab University, Steno English and computer diploma from Hatron. Doing private job in Chandigarh. Father retired Superintendent from Health department Haryana. Mother housewife. Family settled at Zirakpur (Punjab). Preferred match in Tri-city. Avoid Gotras: Dahiya, Balyan, Jatrana. Cont.: 6239058052
- SM4 Jat Girl (DOB 25.10.92) 31/5'5" B.Tech. in Electrical & Communications. Employed as Contract Engineer in BEL Company for six years. Father retired from HMT. Family settled at Pinjore (Haryana). Preferred match in government/private sector. Gotras: Dhayal, Punia, Phaugat. Cont.: 9416270513
- SM4 Jat Girl (DOB 03. 05. 93) 30/5'2" MSc. In Optometry (Gold Medalist). Employed as Assistant Professor in MMU Solan with Rs. 5 lakh PA. Preparing for civil services and other competitive exams. Willing to open her own Clinic. Preferred match in government job or well settled in private sector. Avoid Gotras: Rathee, Ahlawat, Malik, Dahiya, Deswal. Cont.: 9992495183
- SM4 Jat Girl (DOB 07.09.94) 29/5'6" B.A., B.Ed., M.A. (History), NIT, CTET, PRT qualified. Father retired Superintendent from ULB Panchkula. Avoid Gotras: Bhakar, Sheoran, Dahiya. Cont.: 9463436817
- SM4 Jat Girl (DOB August 95) 28/5'11" M.A. Economics & Math, B.Ed. Employed as JBT teacher in private school at Panchkula. Father Ex-serviceman. Mother housewife. Avoid Gotras: Dalal, Kadyan, Gowadia. Cont.: 9888754351, 8054064580
- SM4 Jat Girl (DOB 20.09.96) 27/5'5" B.Sc. (Hons.), MSc. (Hons.) in Geology (Earth Science). Working as hydro geologist. Younger brother pursuing MBBS. Father Assistant Director in DSE Panchkula, Haryana. Family settled at Batana (Punjab). Avoid Gotras: Dhattarwal, Ahlawat, Hooda. Cont.: 9814885021, 9915783511
- SM4 Jat Girl (DOB 07.01.92) 31/5'4" B.A. from Kurukshetra University. GNM from Pt. Bhagwat Dayal University Rohtak. Employed as Staff Nurse in Civil Hospital Sector 6 Panchkula on contract basis. Father retired Supervisor from HMT Pinjore (Haryana). Mother housewife. Own house at Pinjore Preferred match from Tri-city. Avoid Gotras: Bankura, Mann, Narwal. Cont.: 9354839881
- SM4 Jat Girl (DOB 11.07. 97) 26/5'5" B.Sc. Non-Medical from Kurukshetra University, M.Sc. Non-Medical from P. U. Chandigarh. Father Headmaster in Haryana Govt. Mother JBT teacher in Haryana Govt. Family settled at Panipat. Avoid Gotras: Deswal, Dahiya, Malik. Cont.: 7988993289, 9416173036
- SM4 Jat Girl (DOB 31.01.95) 28/5'1" B.Sc., M.Sc. (Botany). UGC, NET qualified. Ph.D in Botany from P. U. Chandigarh. Employed as Assistant Professor in College at Karnal on contract basis. Father retired from Defence. Mother housewife. Family settled at Ambala Cantt (Haryana). Avoid Gotras: Rathi, Kharb, Rana. Cont.: 9812238950
- SM4 Jat Girl (DOB 16.06.95) 28/5'2" Bachelor in Computer Science Engineering. Experience: 6 month internship in Yatra Pvt. Ltd. on line, 2 year as Software Engineer in Yatra Pvt. Ltd., on line. Earnings 11 lac P.A. Avoid Gotras: Kundu. Cont.: 9417869505.
- SM4 Jat Girl (DOB 10.02.96) 27/5'8" B.A., M.A. Economics. Self Employment (Home Tution). Father Superintendent in Forest Department Haryana. Mother housewife. Avoid Gotras: Kundu, Pahal, Lathar. Cont.: 9463226838, 8837546452
- SM4 Jat Girl (DOB 18.11.98) 24/5'4" B.Com., C.A. Package 24 lakh Annual. Father retired Superintendent. Mother housewife. Own house in tricity. Avoid Gotras: Kadyan, Falswal, Dahiya. Cont.: 9888955626
- SM4 Jat Boy (DOB 30. 12. 94) 29/5'11" B.A. Pursuing M. A. History. Employed as Clerk in Haryana Consumer Commission Panchkula. Father retired from Haryana Government. Mother housewife. Family settled at Panchkula. Avoid Gotras: Mor, Dhariwal, Chahal, Malik, Punia, Nehra. Cont.: 9416603097, 9671113565
- SM4 Jat Boy (DOB 16. 08. 95) 28/5'8" B. Tech. in Civil Engineering. Working in Dubai IDBI Bank) with package Rs. 14 lakh PA. Father ASI in Chandigarh Police. Avoid Gotras: Shokhnda, Malik, Lakra. Cont.: 9417483176, 9914156606
- SM4 Jat Boy (DOB 30.06.97) 26/5'5" B.A. JBT. Employed as Office Attendant in Reserve Bank of India, Chandigarh. (Non transferable). Income Rs. 10 lakh P.A. Family settled at Chandigarh. Seven acre land in Haryana. Preferred match in Government sector. Avoid Gotras: Mor, Duhan, Ahlawat. Cont.: 9992255577

- SM4 Jat Boy (DOB 21.11. 95) 28/6 feet. B.Sc. Computer Science, L.L.B. Now practicing in District Court and High Court Chandigarh. Father in Chandigarh Police. Avoid Gotras: Sandhu, Ledre. Cont.: 7888785519, 9041512610
- SM4 Jat Boy (DOB18.10.90) 33/6'1" B. Tech. Employed as CBI Officer in Port Blair and likely to be posted at Chandigarh. Father retired Under Secretary from Haryana government. Mother housewife. Family settled at Zirakpur. Preferred well qualified working match. Avoid Gotras: Khasa, Dahiya, Lathwal. Cont.: 7837551914
- SM4 (Physically Handicap) Jat Boy (DOB 31.03.87) 36/6feet. B. Tech. (Mechanical) from Maharaja Aggrasen Institute Delhi. MBA (Operation Management Correspondence) from MDU Rohtak. Working in MRD department in World Medical College, Jhajjar. Father retired from Transport department Haryana. Mother retired Lib Assistant from MDU. Avoid Gotras: Dahiya, Phaugat, Deswal. Cont.: 9996729404, 9953092079
- SM4 Jat Boy (DOB 30.09.94) 29/5'7" B.Sc. in Computer Science. Employed as Assistant in Central Government department at Chandigarh. Father retired Superintendent. Avoid Gotras: Phaugat, Duhan, Bamel. Cont.: 9463121441, 8288888760
- SM4 Jat Boy (DOB 1994) 29/6'3" Working in IT Company in New Jersey (USA). Pursuing PhD. In Computer Science. Father Lecture in Government school Delhi. Mother Class-I Officer in Delhi. Family settled at Delhi. Avoid Gotras: Dahiya, Sehrawat, Saroha. Cont.: 9315574231
- SM4 Jat Boy (DOB 15.02.89) 34/6'1" M.A. English from Punjab University. Employed as Ahlmad/Clerk in District Court Mohali on regular basis. Father retired Superintendent from ULB Panchkula. Avoid Gotras: Bhakar, Sheoran, Dahiya. Cont.: 9463436817
- SM4 Jat Boy (DOB 29.04.91) 32/5'7" PhD. Submitted in Structural Engineering. Father Assistant Professor in Jat College Rohtak. Mother Government School Principal. Preferred match M.Sc. in Chemistry/Bio./Math/physics with NET. Family settled at Rohtak. Avoid Gotras: Gill, Dahiya, Gehlawat. Cont.: 9416193949
- SM4 Jat Boy 30/6'2". Employed as Coach at Rohtak. Won Bronze medal in shot put in recent Para Asian Games China. Avoid Gotras: Hooda, Dagar. Cont.: 8607034318
- SM4 Jat Boy (DOB 05.06.96) 27/5'11". B. Tech. in Mechanical Engineering. Working as Assistant Manager in a reputed company at Noida with income 7.20 lakh PA. Agriculture land 1½ acre. Own house in Karnal. Father retired District Education Officer from Haryana Govt. Two married elder sisters. Avoid Gotras: Balyan, Mann. Cont.: 9466367107
- SM4 Jat Boy (DOB 28.09.92) 31/5'10". MBBS from Jhalawar Medical College PGI M.S. (Orthopedics) SMS Jaipur. Employed as M.O. Govt. Job. at Sri Dungergarh Bikaner (Rajasthan). Salary 1.10 LPM. Father retired SDO from Railway. Mother housewife. Eight acre agriculture land at village. Avoid Gotras: Punia, Mor, Roj. Cont.: 9350033583, 9416450228
- SM4 Jat Boy (DOB 09.09.97) 26/6 feet. B. Tech (Computer Science). MBA. Employed as Software Engineer in Rocket Software Pune with package Rs. 16 LPA (work from home). Father retired Supervisor from HMT Pinjore (Haryana). Mother housewife. Own house at Pinjore. Own coaching institute at Pinjore with income of Rs. 31 lakh PA. Avoid Gotras: Bankura, Mann, Narwal. Cont.: 9354839881
- SM4 Jat Boy (DOB 28.04.96) 27/184 CM. Captain in Army. Posted at Pune. Father in transport business. Mother housewife. Family settled at Zirakpur. Avoid Gotras: Dhull, Sheoran, Nehra. Cont.: 9878705529
- SM4 Jat Boy (DOB 25.01.97) 26/5'11" B. Tech. in Computer Science. Working as Lead Software Engineer in Statrys Ltd. at Bangkok, Thailand with Rs. 31 lakh package PA. Family settled at Pinjore. Avoid Gotras: Thenwa. Cont.: 8558024346
- SM4 Jat Boy (DOB 10.12.93) 29/ B. Tech. Employed in PGIMER Chandigarh in Fire & Security Department. Family settled at Panchkula. Avoid Gotras: Sangwan, Jakhar, Sheoran. Cont.: 8901138020, 8882830601
- SM4 divorced Jat Boy (DOB 14.03.95) 28/5'10" M. A. English. Employed in Municipal Corporation Chandigarh as clerk on contract basis. Family settled at Panchkula. Avoid Gotras: Sangwan, Jakhar, Pachahar. Cont.: 9463961502
- SM4 Jat Boy (DOB 12.07.96) 27/5'8" B. A., pursuing M.A. Employed as Stenographer (Govt. job) in Education Department. Avoid Gotras: Narwal, Kundu, Mann. Cont.: 9417869505, 9315428491
- SM4 Jat Boy (DOB 26.05.98) 25/5'8" MBBS. Working as J.R. in Safdar Jung Hospital Delhi. Father Sub-Inspector CRPF. Mother ANM. Avoid Gotras: Nehra, Gadhwal, Michuh. Cont.: 9015124456
- SM4 Jat Boy (DOB 20. 10. 92) 30/5'5" Graduate. Doing private job. Father retired from Government job. Mother in private job. Family settled at Chandigarh. Avoid Gotras: Lamba, Nandal, Ghalyan. Cont.: 7696771747

हमें जिन पर गर्व है।

श्रीमती प्रियंका पुनिया धर्मपत्नी श्री विरेंद्र पुनिया पंचकुला को स्टेट अवार्ड मिलने पर जाट सभा की ओर से शुभकामनाएँ। श्रीमती प्रियंका पुनिया एक शिक्षाविद, मोटिवेशनल स्पीकर तथा आसमान फाउंडेशन की प्रांतीय अध्यक्ष है। आसमान फाउंडेशन के तहत प्लास्टिक फ्री तथा पोल्युशन फ्री पंचकुला, क्लाइमेट एक्टिविस्ट तैयार करने, रीसाइक्लर रियूज केंद्र में महिलाओं को रोजगार देने, कपड़े के थैले बनाने, स्कूलों में पर्यावरण जागरूकता कार्यक्रम करने, अंडरप्रिविलेड बच्चों के लिए फ्री लाइब्रेरी खोलने, 300 से अधिक बच्चों की फ्री कोचिंग, लड़कियों की स्किल ड्रवलपमेंट, पब्लिक स्पिकिंग तथा पर्सनालिटी डेवलपनेंट, इमोशनल इंटेलिजेंस के तहत बच्चों तथा महिलाओं की मानसिक स्वास्थ्य की देखभाल तथा जवानों तथा छात्रों की आत्महत्या रोकने पर काम कर रही है।

आर्थिक अनुदान की अपील

प्रिय साथियों, भाई–बहनों एवं बुजुर्गो,

आपको जानकर प्रसन्नता होगी कि गांव नोमैई, ग्राम पंचायत कोटली बाजालान कटरा–जम्मु में जी.टी. रोड़ 10 पर चौ० छोटूराम यात्री निवास कटरा के लिये प्रस्तावित 10 कनाल भूस्थल पर चार दिवारी का निर्माण पूरा हो चुका है जिस पर लगभग 35 लाख रुपये खर्च हो चुके है। यात्री निवास स्थल पर विकास एवं पंचायत विभाग कटरा द्वारा सरकारी खर्च से दो महिला व पुरूष शौचालय एवं स्नानघर का निर्माण पहले से किया जा चुका है। यात्री स्थल की लिंक रोड़ पर छोटी पुलिया का काम भी शीघ्र पूरा हो जायेगा।

यात्री निवास भवन का शिलान्यास व दीन बंधु चौधरी छोटू राम को विशालकाय प्रतिमा का अनावरण 10 फरवरी 2019 को बसंत पंचमी उत्सव एवं दीनबंधु चौधरी छोटूराम की 136वीं जयंती समारोह के दौरान महामहिम राजपाल, जम्मु काश्मीर माननीय श्री सत्यपाल मलिक द्वारा तीन केंद्रीय मंत्री चौधरी सिंह केंद्रीय राज्यमंत्री (स्वतंत्र प्रभार) पीएमओ डा जितेंद्र सिंह व जाट सभा के अध्यक्ष एवं हरियाणा के पूर्व पुलिस महानिदेशक डा एम एस मलिक, भा०पु०से० (सेवानिवृत) की उपस्थिति में संपन्न किया गया।

यात्री भवन में फैमिली सुईट सहित 300 कमरे होगें। जिसमें मल्टीपर्पज हाल, कांफ्रैंस हाल, डिस्पेंसरी, मैडीकल स्टोर, लाइब्रेरी, बच्चों की प्रतिभा विकास एवं विभिन्न व्यवसायिक व सुरक्षा संबंधी सेवाओं में प्रवेश के लिए कोचिंग की विशेष सुविधाएं उपलब्ध होगी। सुरक्षा सैनिकों, शहीद परिवारों व उनके आश्रितों के लिए मुफ्त ठहरने तथा माता वैष्णों देवी के बदलुओं के लिए विशेष सुविधाएं प्रदान की जाएगी। यात्री निवास के निर्माण के लिये श्री राम कंवर साहु सुपुत्र श्री पूर्ण सिंह, गांव बीबीपुर जिला दान निवासी मकान नं0 110 सुभाष नगर, रोहतक द्वारा 5,11,111 रुपये तथा श्री सुखबीर सिंह नांदल, निवासी मकान नं. 426–427, नेमी सागर कालोनी, वैशाली नगर, जयपुर द्वारा 5,01,000 रुपये तथा श्री देशपाल सिंह निवासी मकान न0 990, सैक्टर–3, कुरुक्षेत्र (हरियाणा) द्वारा 5,00,000 रुपये की राशि जाट सभा को दान स्वरूप प्रदान की गई है।

अतः आप सभी से नम्र निवेदन है कि इस कल्याणकारी व पुनित सामाजिक कार्य के लिए स्वेच्छा अनुसार शीघ्र अनुदान देने की कृपा करें ताकि चार दिवारी पूरी होने के बाद निर्माण कार्य शुरू किया जा सके जोकि आज सभी के सहयोग से ही सम्भव हो सकेगा। यदि कोई दानी सज्जन यात्री निवास में कमरे के निर्माण हेतु 5 लाख रूपये या इससे अधिक की राशि दान देता है तो उसका नाम भवन परिसर में उचित स्थान पर अंकित किया जाएगा। यात्री निवास भवन के लिए अनुदान देने वाले सज्जनों का उचित विवरण रखा जाएगा और उनका नाम सभा द्वारा प्रकाशित मासिक पत्रिका 'जाट लहर' में भी प्रकाशित किया जाएगा। भवन निर्माण की अनुदान राशि चैक, डिमांड ड्राफ्ट द्वारा 'जाट सभा चंडीगढ़' के पक्ष में जाट भवन 2–बी, सैक्टर 27–ए, मध्य मार्ग, चंडीगढ़ में भेजी जा सकती है अथवा आर.टी.जी.एस की मार्फत सीधे जाट सभा के बचत खाता नंबर 50100023714552, आईएफएससी कोड– एचडीएफसी 0001324 में ट्रांसफर की जा सकती है। अनुदान की राशि आयकर अधिनियम की धारा 80–जी के तहत आयकर से मुक्त है।

निवेदक : कार्यकारिणी जाट सभा चंडीगढ़/पंचकुला,
चौधरी छोटू राम सेवा सदन, कटरा, जम्मू

सम्पादक मंडल

सरंक्षक एवं सम्पादक : डा. एम.एस. मलिक, आई.पी.एस. (सेवानिवृत)

सह–सम्पादक : डा० राजवन्तीमान

साज सज्जा एवं आमुख : श्री आर. के. मलिक

प्रकाशन समिति : श्री बी.एस. गिल, मो० : 9888004417
श्री जे.एस. ढिल्लो, मो० : 9416282798

वितरक : श्री प्रेम सिंह, कार्यालय सचिव, जाट भवन, चण्डीगढ़

जाट भवन 2–बी, सैक्टर 27–ए, चण्डीगढ़

फोन : **0172-5086180, M-9877149580**

Email: jat_sabha@yahoo.com; Website: www.jatsabha.org

सर छोटूराम जाट भवन, सैक्टर–6, पंचकूला

फोन : 0172–2590870, M-9467763337

Email: jatbhawan6pkl@gmail.com

चौधरी छोटू राम सेवा सदन, कटरा, जम्मू

Postal Registration No. CHD/0107/2024-2026

RNI No. CHABIL/2000/3469

मुद्रक प्रकाशन एवं सरंक्षक सम्पादक डा. एम. एस. मलिक ने जाट सभा, चंडीगढ़ के लिए एसोशियटिड प्रिन्टर्ज़, चंडीगढ़, फोन : 0172–2650168 से मुद्रित करवा कर जाट भवन, 2–बी, मध्यमार्ग, सैक्टर 27–ए, चंडीगढ़ से प्रकाशित किया।